ISSN NO. 0971-8443

बाल भारती

सितंबर 2019

मूल्य : ₹15

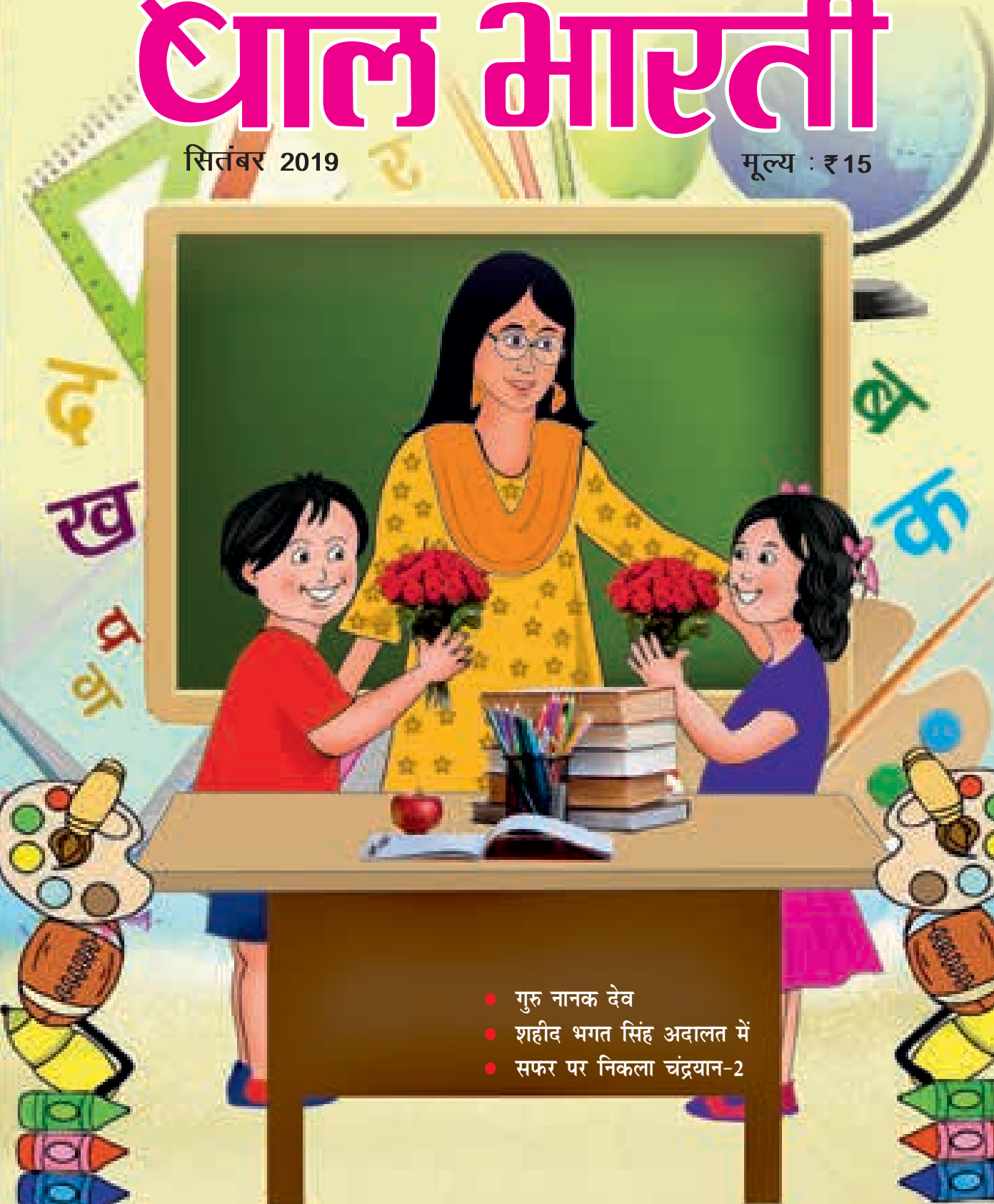

- गुरु नानक देव
- शहीद भगत सिंह अदालत में
- सफर पर निकला चंद्रयान-2

हमारे महत्वपूर्ण प्रकाशन

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्प्लेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

पुस्तक खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट
publicationsdivision.nic.in देखें

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :
फोन : 011-24367260, 24365610
ई-मेल : businesswng@gmail.com

ट्विटर पर फॉलो करें @DPD_India

बच्चों की संपूर्ण पत्रिका

बाल भारती

1948 से प्रकाशित

वर्ष 72 : अंक : 4 पृष्ठ : 56 भाद्रपद-आश्विन 1941 सितंबर 2019

लेख

शहीद भगत सिंह अदालत में	वीरेन्द्र सिंह	14
मिठाई की चोरी और बत्ती बंद	विमला मेहता, वीरेन्द्र राज मेहता	21
सफर पर निकला चंद्रयान-2	मंजू चौहान	25
राष्ट्रभाषा	यू. एस. मोहनराव	34
गुरु नानक देव	महीप सिंह	40
श्री प्रकाश जावड़ेकर ने प्रकाशन विभाग की अनेक ई-परियोजनाओं की शुरुआत की	---	50

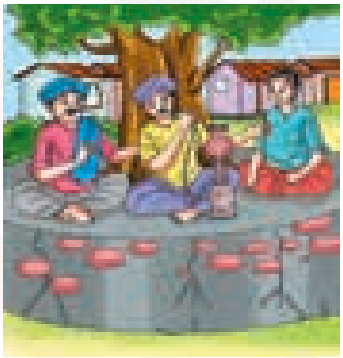

कहानियां

कैफ की तिजोरी	चित्रलेखा अग्रवाल	6
नीड़	राजेश चौधरी	10
बच्चों के गीत	विष्णु भट्ट	12
शिकंजा	अरनी रॉबर्ट्स	18
मन भर जलेबी	विजय के. सिंह	23
जन सुनवाई	शंकर लाल माहेश्वरी	45
तीन-तीन राजा	पवन कुमार वर्मा	47

कविताएं

आओ बादल भैया आओ	हरदेव सिंह धीमान्	52

महान कवि : महान कविताएं

बया हमारी चिड़िया रानी	महादेवी वर्मा	28
तितली से		29

उपन्यास

पीटर पैन	36

- चित्रकथा 30-33
- दुनिया हमारे आस-पास 53

वरिष्ठ संपादक : **राजेंद्र भट्ट**

संपादक : **आभा गौड़**

दूरभाष : 011-24362910

व्यापार व्यवस्थापक

ई-मेल : *pdjucir@gmail.com*

दूरभाष : 011-24367453

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : **वी. के. मीणा**

आवरण : **राजिन्द्र कुमार**

चित्रांकन : **प्रज्ञा उपाध्याय, शिवानी**

ई-मेल : *balbharti1948@gmail.com*

वेबसाइट : *www.publicationsdivision.nic.in*

फेसबुक पेज : *www.facebook.com/publicationsdivision*

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता :

संपादक 'बाल भारती', कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

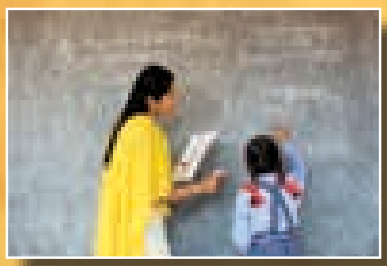

हमारी बात

बच्चो! आप सभी जानते हैं कि हमारे समाज में गुरु को ईश्वर के समान दर्जा दिया गया है। गुरु-शिष्य का संबंध भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में सम्माननीय है। हर सफल आदमी की कहानी में कोई-न-कोई ऐसा शिक्षक या व्यक्तित्व शामिल है जिसने उसे उसके मुकाम तक पहुंचाने में महती भूमिका निभाई है।

यदि हम क्रिकेट की दुनिया के ध्रुव तारे सचिन की बात करें तो उनके गुरु रमाकांत आचरेकर का जिक्र स्वत: ही होता है। इतिहास में सिकंदर के गुरु अरस्तु और अरस्तु के गुरु सुकरात विश्व प्रसिद्ध हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ मौर्य वंश का उद्‌गम चाणक्य के बगैर संभव नहीं था और स्वामी विवेकानंद का सफर श्री रामकृष्ण परमहंस के बगैर अधूरा है। गुरु मत्सयेन्द्र और गुरु गोरखनाथ की कहानियां तो भारतीय संस्कृति और परम्परा का हिस्सा रही हैं, इनके कितने ही किस्से और लोकगीत लोकजीवन में रस-बस गए हैं।

हर बच्चे के साथ उसके शिक्षक के रूप में मागदर्शक खड़ा है जो उसे उसकी कमियों से उबार कर उसके व्यक्तित्व को न सिर्फ तराशता है साथ ही नया आयाम देता है। क्षेत्र कोई भी हो- स्कूल की कोई कक्षा हो या नृत्य शाला, वास्तुकला हो या संगीत, खेल का मैदान हो या घरेलु कार्य, हर कार्य गुरु-शिष्य परम्परा का अनुपम उदाहरण है। इंजीनियरिंग अथवा चिकित्सा, डिजीटल दुनिया हो या आध्यात्म, हर क्षेत्र में बिना गुरु के कोई महारथ हासिल नहीं कर सकता।

बच्चो! यह भी होता है कि जब वे हमें सराहते हैं तो हम प्रसन्न होते हैं लेकिन जब वे हमें डांटते हैं, टोकते-रोकते हैं तो हमें बुरा लगता है। बच्चो! यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि वे हमें जो भी कहते-सुनते हैं, निदेश देते हैं, वह हमारे हित में ही होता है। और जब हमारे माध्यम से उनकी मेहनत सही दिशा लेती है तो हमारी खुशी में वे हमसे कहीं अधिक प्रसन्न होते हैं।

साथियो आओ, आज हम नमन करें अपने सभी शिक्षकों को जो हमारे जीवन को एक सार्थक मुकाम तक लाने में सदैव तत्पर हैं। वे निस्वार्थ भाव से हमें संवार रहे हैं, आगे बढ़ा रहे हैं। हम भी तत्पर हों उनके स्वप्नों को फलीभूत करने के लिए जो हमारे लिए उनकी आंखों में पलते हैं।

आपकी बात

बाल भारती का जुलाई के अंक पढ़ा। बेहद अच्छा लगा। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, *गोरा साधु और उनका संग्रहालय* तथा *हाथी चले अस्पताल* आलेख अच्छे लगे। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार सारी दुनियां से दस लाख वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। ये प्रजातियों विलुप्ति के कगार पर पहुंच गई हैं। इसलिए सरकार और समाज को मिलकर वन्यजीव संरक्षण और वनीकरण की ओर ध्यान देना चाहिए। आपकी पत्रिका के माध्यम से मैं दो संदेश लोगों को देना चाहता हूं। पहला अपने बच्चे को 18 वर्ष की उम्र तक मोबाइल खरीदकर न दें। उसकी जगह *बाल भारती* और विज्ञान से संबंधित पत्रिकाएं बच्चों को खरीदकर पढ़ने को दें। इससे उनमें रचनात्मक प्रवृत्ति जागृत होगी। दूसरी बात जलवायु परिवर्तन के खतरे से सारी दुनियां त्रस्त है। पर्यावरण संरक्षण सभी के लिए जरूरी है। पृथ्वी ग्रह को हरा-भरा बनाए। सभी लोग इस बरसात के मौसम में एक पौधा लगाकर उसका पोषण करे। देश में वन क्षेत्र 33 प्रतिशत होना चाहिए। जो भारत देश में बहुत कम है। प्रकृति का संरक्षण करें और जलवायु परिवर्तन के खतरे से बचने के लिए अपना योगदान दें। शानदार अंक सम्पादन के लिए सारी सम्पादन टीम और संपादक को हार्दिक धन्यवाद।

–कुलदीप मोहन त्रिवेदी, प्रवक्ता, सरजू देवी माता प्रसाद इंटर कालेज बैगाव, पोस्ट-बैगाव, जिला-उन्नाव, पिन-209825 (उ.प्र)

बाल भारती जुलाई अंक पढ़ा इसमें प्रकाशित सभी लेख कहानी और कविता मुझे बहुत अच्छी लगीं। पत्रिका में प्रकाशित सभी सामग्री बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक होती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए यह पत्रिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस अंक में प्रकाशित लेख *राष्ट्रपिता गांधी, गोरा साधु और उनका संग्रहालय* और *हाथी चले अस्पताल* जानकारीपरक थे। कहानियों में मेरी *प्यारी दादी, मां का मंत्र* और *शब्द की तलाश* अच्छी लगी और कविताओं में *पानी है जीवन का वरदान* तथा *रच दे नूतन संसार बेटी* विशेष पसंद आई। मैं इस पत्रिका का नियमित पाठक हूं। इतनी अच्छी पत्रिका प्रकाशित करने के लिए प्रकाशन विभाग एवं संपादक मंडल को बहुत धन्यवाद।

–दिनकर शुक्ला, सीतामढ़ी, बिहार

बाल पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया हमें भेजें। आप हमें ई-मेल balbharti1948@gmail.com पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ अपना पता, ई-मेल, फोन नंबर, अवश्य भेजें। रचना की छायाप्रति अपने पास रखें। अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी।

कैफ की तिजोरी

–चित्रलेखा अग्रवाल

कैफ के पापा की तबियत ठीक होने में नहीं आ रही थी। कैफ की आँखें हमेशा आंसुओं से भरी रहती थीं। क्लास में सब दोस्त और अध्यापिका कैफ को समझाते पर वह बुत बना बैठा रहता। फिर गर्मियों की छुट्टियों के लिए स्कूल डेढ़ महीने के लिए बंद हो गया। बच्चे छुट्टियां बिताने के लिए नानी के घर या पर्यटन स्थल चले गए।

छुट्टियां खत्म होने के बाद स्कूल खुला। बच्चे जैसे छुट्टियां होने पर नानी के घर जाने को उतावले थे वैसे ही स्कूल खुलने पर स्कूल आने को उधार खाये बैठे थे। बच्चों में छुट्टियों की बातें और यादें एक-दूसरे को बताने की होड़ लगी हुई थी।

तीसरे दिन जब सब बच्चे अपने-अपने गीत गा चुके तो उन्हें कैफ का ध्यान आया। कैफ आज भी स्कूल नहीं आया था। वे सोच में पड़ गए–"कैफ के पापा अब तक ठीक भी हो गए होंगे। शायद कैफ नानी के घर से न लौटा हो। पर अगर कैफ लगातार दस दिन स्कूल नहीं आएगा तो उसका नाम स्कूल से कट जाएगा।

बच्चों ने छुट्टी के बाद कैफ के घर जाने की योजना बनाई। रॉबिन ने सलाह दी–"अगर हम छुट्टी के बाद घर नहीं पहुंचे तो घर में हड़कंप मच जाएगा। मम्मी-पापा टी.वी और अखबार में रोज बच्चों के स्कूल से लापता होने का जानकर चिंतित रहते हैं। कल रविवार है। सभी के पापा कल घर

में होंगे। वे हमें ग्यारह बजे कैफ के घर पहुंचा देंगे। एक बजे ले जाएंगे। रॉबिन की सलाह से सभी सहमत थे।

कैफ की दोस्त पूरी कक्षा थी। रविवार को ग्यारह बजे लगभग पूरी कक्षा कैफ के घर पहुंची। सबके पापा बच्चों को कैफ के घर छोड़ गए थे और एक बजे आने को कह गए थे।

अपनी पूरी कक्षा को घर पर देखकर कैफ पहले तो खुश हुआ फिर कुछ सोचकर कैफ एकदम से उदास हो गया। गुरविन्दर ने कहा- "कैफ हम अंकल से मिलने आए है। तुम स्कूल नहीं आ रहे थे तो हम सभी की अंकल की फिक्र हो गई थी।''

कैफ की आंखें फिर आंसुओं से भर गईं। तभी कैफ की अम्मी आई। वह भी बहुत उदास और महीनों की बीमार लग रही थीं। कैफ की कक्षा के बच्चों की बात सुनकर वह रोने लगीं। आंसुओं को पोंछकर वह बताने लगीं। ''बच्चों कैफ के अब्बा अल्लाह को प्यारे हो गए हैं। अब कैफ और उसके भाई की तालीम छूट जाएगी। सैफ बारहवें दर्जे में है। वह मदरसे जाने के साथ-साथ अपने अब्बा का काम में भी हाथ बंटाता था। अब वह पलम्बर का काम करेगा।

''पर बच्चों वे इत्ता नहीं कमा पाएगा कि घर को खाना भी नसीब हो जाए और कैफ को तालीम भी हासिल हो जाए। मैं भी सिलाई करती हूं, वे सब पैसे कैफ-सैफ के अब्बा के इलाज में खर्च हो जाते थे। हम पर कुछ कर्जा भी हो गया था। सिलाई करके मैं वह कर्जा उतारूंगी। बच्चों कैफ-सैफ के अब्बा की आमदनी रोज कुआं खोदना रोज पानी पीने की तरह थी। उसमें जो बचता था वह भी सब डॉक्टरों और दवाईयों में खर्च हो गया। मैं कैफ को भी किसी के घर काम पर लगा दूंगी। अभी इसे कोई हुनर भी तो नहीं आता है।''

कैफ की कक्षा को यह जानकर बहुत दु:ख हुआ कि कैफ अब स्कूल नहीं आएगा। कैफ की अम्मी ने बच्चों को शरबत बनाकर पिलाया। एक बजे सब बच्चे अपने-अपने पापा के साथ चले गए।

अगले दिन बच्चों के चेहरे उतरे हुए थे। वे *गेम्स* के पीरियड में खेलने के लिए नहीं गए। अध्यापिका सरस्वती भी कैफ के पापा के बारे में जानकर दु:ख हुई। वह भी सोच में पड़ गई कि कैफ की पढ़ाई छूट जाएगी।

अगले दिन सरस्वती कैफ के घर गई। कैफ की अम्मी से मिलीं। उन्होंने कैफ की अम्मी को समझाया ''कैफ का स्कूल मत छुटवाइए। कैफ पढ़ने में बहुत अच्छा है। यूनिफार्म और किताबें तो कैफ के पास हैं ही।''

कैफ की उम्मी ने मैडम को घर के हालात बताए- कैफ की बाकी महीनों की फीस और सालाना देनदारी कहां से देंगे। हमारा कोई रिश्तेदार भी इतना रहम दिल नहीं है जो कैफ की पढ़ाई के खर्चे में हमारा हाथ बंटाए। मैं और सैफ इतना नहीं कमा पाएंगे कि खाना भी खा लें और कैफ को पढ़ा भी लें।''

सरस्वती ने सलाह दी- ''पर हमारे स्कूल का मैनेजमेंट पूरा रहम दिल है। मैं स्कूल मैनेजमेंट से कैफ की फीस आधी करवा दूंगी। एनुअल चार्ज भी तिहाई छुड़वा दूंगी। कैफ अभी कहीं पर भी काम करने के लिए छोटा है। अभी उसकी पढ़ाई चलने दें।''

कैफ की अम्मी की चिंता थोड़ी कम हुई। फिर भी इतना भी कैसे होगा? यह सोचकर उदास हो गई। सरस्वती ने चलते-चलते कैफ की अम्मी से कल से कैफ को स्कूल जरूर भेजने का वायदा ले लिया और कैफ के घर से चली गई।

रास्ते में काफी देर के इंतजार के बाद भी सरस्वती मैडम को ई-रिक्शा नहीं मिला। वह पैदल ही बुध बाजार की तरफ चल दीं। उन्होंने वहां से मिट्टी की संदूकची वाली सुंदर कलाकारी की हुई गुल्लक खरीद ली। उसमें पैसे डालने के लिए संदूकची के ढक्कने

पर लंबा-सा छेद बना हुआ था। संदूकची पर लोहे की कुंडी लगी थी। कुंडी में गोल, सुंदर सा ताला झूल रहा था।

कैफ अगले दिन से स्कूल आने लगा। सरस्वती मैडम ने ताला लगी मिट्टी की संदूकची वाली गुल्लक क्लास की मेज पर रख दी।

सरस्वती ने बच्चों से कहा- ''बच्चों कल मैंने कैफ के घर से लौटते हुए बुध बाजार आप सबके लिए यह सुंदर-सा *सेविंग बॉक्स* लिया है। इसकी सुंदरता के कारण नहीं बल्कि इसकी उपयोगिता के कारण लाई हूं। कल आप सब कैफ की पढ़ाई को लेकर चिंतित थे। अब ये गुल्लक कैफ की पढ़ाई कराएगा।''

बच्चों ने आश्चर्य से एक साथ पूछा ''कैसे मैडम कैसे?'' ''वह ऐसे'' मैडम ने बताना शुरू किया- ''आपके पास जो एक रुपये और दो रुपये के सिक्के होते हैं। आप उनकी परवाह नहीं करते। इधर-उधर कहीं भी डाल देते हैं या टॉफी आदि खा लेते हैं। और फिर आपको कभी उनका ध्यान तक नहीं आता। लेकिन अब आपको वे सिक्के इस संदूकची वाली गुल्लक में डालने हैं। कैफ आपको भी सिक्के डालने हैं। आपको अपनी सहायता स्वयं करनी है। मैं भी आप सबको सहयोग दूंगी। आप लोग अपने मम्मी-पापा से भी एक और दो रुपये वाले सिक्के अपने दोस्त की पढ़ाई कराने के लिए मांग लिया करें। हम सभी के प्रयासों से कैफ की ही पढ़ाई की ट्रेन कभी नहीं रुकेगी।''

बच्चों को मैडम का आइडिया समझ में आता जा रहा था। उनकी बूंद-बूंद की बचत से जिसे वह

लापरवाही से कहीं भी फेंक देते थे, वह कैफ की पढ़ाई को चलाती रहेगी। अब वह उसे क्लास की गुल्लक में डालते रहेंगे। मैडम ने गुल्लक पर 'कैफ की तिजोरी' भी लिख दिया। अब कैफ की कक्षा के बच्चे अपनी मम्मी-पापा और अपने सिक्के रोज कैफ की तिजोरी में डालने लगे। कैफ ने अम्मी से सिक्के मांगे पर उनके पास सिक्के नहीं थे क्योंकि उनको सिलाई के बंधे रुपये मिलते थे। उन्होंने कैफ को सिक्के देने के लिए सिलाई के रेट बढ़ा दिए। कपड़े सिलकर वह सिले कपड़ों को कैफ के हाथ भेजने लगी। कैफ सिलाई के पैसे लाकर अम्मी के हाथ पर रख देता। अम्मी कैफ को सिक्के देकर हंसकर कहती ''ये तेरी सिलाई पहुंचाने का मेहनताना।'' सैफ ने भी प्लम्बरिंग के काम में एक और दो रुपये बढ़ा दिए थे। वह भी रोज कैफ को बढ़े सिक्के देने लगा। अब कैफ भी अपनी तिजोरी रोज कई सारे सिक्कों से भरने लगा।

बच्चे जब गुल्लक में सिक्के डालते तब उसमें 'खन्न' की आवाज आती। बच्चे समझ जाते कि जैसे बारिश के पानी से नदी का जल स्तर बढ़ जाता है, वैसे ही हमारे सिक्कों की बारिश से कैफ की तिजोरी जल्दी ही मुंह तलक भर जाएगी। तब हम मैडम से एक और गुल्लक मंगाएंगे और उसे ऊपर तक भर देंगे।

महीने के आखिरी दिन मैडम ने कोमल से अल्मारी से गुल्लक उठा लाने को कहा- ''देखें कैफ की तिजोरी में कुछ है भी या नहीं।''

कोमल ने संदूकची उठाई तो उससे उठाई नहीं गई। वह अल्मारी के पास से ही बोली-"मैम तिजोरी भारी है। कुली बुलाना पड़ेगा।" प्रथम ने तुरंत हाथ उठाकर कहा- "मैम मैं उठा लाता हूं। कोमल से तो जमीन पर गिरी बॉल भी नहीं उठती।"

पर्स से चाबी निकालकर मैडम ने गुल्लक खोली। गुल्लक सिक्कों से लबालब भरी थी। मैडम ने सब बच्चों को एक-एक मुठ्ठी खरीज गिनने को दी। पच्चीस दिन में बच्चों ने दो हजार पचपन रुपये जमा कर लिए थे। मैडम ने पांच रुपये के सिक्के तिजोरी में डालकर उसमें ताला लगा दिया और कहा-"कल से आपको कैफ की तिजोरी' ऐसे ही भरनी है।

कैंटीन से पचास रुपये की टॉफी मंगाकर मैडम ने बच्चों को बांट दी। एक टॉफी मैडम ने स्वयं भी खाई। मैडम ने क्लर्क ऑफिस में जाकर कैफ की फीस और 'एनुअल चर्जिज' जमाकर दिए। क्लर्क मैडम ने सरस्वती मैडम से कहा-"कैफ की बुक्स और कॉपियों के अभी तक भी पूरे पैसे नहीं आये हैं। 'एनुअल चर्जिज' में भी एक हजार कम हैं।" सरस्वती ने क्लर्क मैडम को तसल्ली दी- "मैडम आने वाले महीनों में कैफ के सब पैसे जमा हो जाएंगे। कैफ को क्लीन चिट मिल जाएगी।"

कैफ की क्लास टीचर सरस्वती मैडम ने पूरी बात जानकर प्रिंसिपल मैडम ने अगले दिन असेम्बली में कैफ की कक्षा की बहुत प्रशंसा की-"बच्चो! आपने देखा कि छोटी-छोटी बचत से कैफ की कक्षा ने कैफ की पढ़ाई की ट्रेन को रुकने नहीं दिया। कोई भी काम असम्भव नहीं है। आज अच्छे संकल्प लें और उसे पूरे मन से पूरा करें। मैं आपकी क्लास टीचर सरस्वती को भी बधाई देती हूं कि उन्होंने आपको संकल्प पूरा करने का छोटी बचत जैसा सख्त मार्ग बताया। छोटी बचत मुश्किल से मुश्किल को मुश्किल को भी आसान बना देती है।

बच्चे लगातार कैफ की तिजोरी में योगदान देते रहे। कैफ अब मुस्कुराने लगा था।

अंत में प्रिंसिपल मैम ने बच्चों से कैफ की क्लास के लिए 'स्पेशल ताली' बजाने को कहा।

बच्चों ने 'स्पेशल ताली' बजाई और अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गए। ❑

-610, रॉयल टावर, शिप्रा सनसिटी, इंदिरा पुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)-201014

नीड़

–राजेश चौधरी

बेटा:- पापा जी यहां चीं... चीं हो रही है।

पिता ने गमले में पानी देते हुए बात को अनसुना कर दिया।

बेटा:- पापा जी छोटी चिड़िया चीं चीं, चीं चीं कर रही है।

अब पिता को लगा कहीं कुछ है। बेटे की दृष्टि अमरूद की डाल ने लटक रहे छोटे से घोंसले पर थी।

पिता ने भी समीप आकर ध्यान से देखा तो घोंसले के छोटे से गोल छेद से दो चमकीली आंखें और एक नन्हीं सी चोंच झांक रही थी, मानो कुछ कहना चाहती हो। इतने में ही, इस चिड़िया की मां या पिता घोंसले के पास आ शोर करने लगा। यह उसकी असहजता के संकेत थे। सद्य: जात इस भय के भाव से अपरिचित हों, पर पक्षियों की पीढ़ी मानव से डरना जानती है।

पिता ने बेटे से कहा:- अब यहां से हट जाइए, छोटी चिड़िया के माता-पिता घबराए हुए हैं।

बेटा:- क्यों पापा?

पिता:- उन्हें डर लग रहा है कहीं हम इनके बच्चों को क्षति न पहुंचा दें।

बेटा:- पर हम तो इसको कुछ भी नहीं कर रहे, फिर क्यों डरती है?

पिता:- मानव ने इन जीवों की क्षति ही क्षति की है। प्रकृति का सिर्फ नाश ही नाश किया है। प्रकृति का दोहन, जंगल को नुकसान, जीव-जंतु का नुकसान। अगर हरियाली और पेड़ होते तो ये मानव के इतने पास आकर घोंसला नहीं बनाती।

बेटा:- पर गौरेयों को आश्रय देने के लिए लोगों ने तो अपने घरों में घरौंदा टांगे हुए हैं।

पिता:- क्या आपने किसी घरौंदे में गौरेयों को रहते देखा है?

बेटा:- नहीं, पर कबूतर तो रहते हैं।

पिता:- वर्षों से कबूतर हमारे पास रहते आए हैं। इस पक्षी का मनुष्य से अनुकूलन हो गया है। प्रकृति के साथ रहने वाले जीव टिन या प्लास्टिक के घरों में नहीं रह सकते।

बेटा:- क्यों?

पिता:- इन घरों में बदलते मौसम के साथ अनुकूलन नहीं होता। इन प्राणियों के पास ओढ़ना-बिछावन तो होता नहीं। इनको ओढ़ना-बिछावन इनके घोंसले और पंख ही हैं। यह कहते हुए पिता बेटे को घोंसले से दूर ले गए। तब जाकर ये बिल्कुल नीली छोटी चिड़ियां निश्चिंत हुई।

निम्न मध्यमवर्गीय लोगों के इस बसावट में समान्य लोग ही आ-आकर बसे हैं। लोग कहते हैं पहले यहां आम का बगीचा था। यहां के मालदह आम की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। शहर के बढ़ने के साथ-साथ आम के

सारे बगीचे नष्ट कर दिए गए। अब यहां अनियोजित मुहल्ले बसते जा रहे हैं। अब तो आम का एक भी पेड़ नहीं बचा है। पेड़-पौधों के नष्ट कर दिए जाने से कई तरह के छोटे पशु-पक्षी विलुप्त प्राय हो गए। टिटहरी, बटेर, तीतर अब कहीं नहीं दिखाई देते। बसंत भी कोयल को नहीं बुलाता। अगर कोयल दिखती भी है तो बोलती नहीं। अब कौवे ही अपनी कर्कश ध्वनि से पक्षियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कोए के पीछे एक आध मैना, गौरैया।

यहां की आबादी में भी हर साल नई बढ़ोतरी हो रही है। नए लोग आते जा रहे है, पेड़-पौधे, हरियाली गायब होती जा रही है। पहले घर के आगे नींबू, अमरूद जैसे पेड़ लगाते थे, अब उसे भी काट-काट कर घर बड़ा कर रहे हैं।

लाख उकसावे के बाद भी इस घर के मालिक ने घर बड़ा नहीं किया। घर के अहाते के भीतर छोटी सी जमीन में अमरूद, मेहंदी, नींबू, पपीता, चमेली, गुलाब जैसे छोटे-छोटे पौधे बेतरतीब ढ़ंग से लगे हुए हैं।

जब इन पौधों में या इनके सहारे लटक रही लताओं में फूल लगते हैं, कीट पतंगे उड़-उड़ के चले आते हैं। फिर इनके पीछे आहार श्रृंखला की अगली कड़ी।

एक दिन एक छोटी चटख नीले रंग की एक वर्णी चिड़िया अमरूद की डाल से उलटा लटक रही थी। असहाय सी उसकी कातर चीं-चीं की पुकार पर गृह स्वामी घर से दौड़े बाहर आए। पैनी दृष्टि से देखने पर पता चला चिड़ियां का एक पैर महिला के एक लंबे बाल में उलझा हुआ है। छुटकारा पाने की चेष्टा में थककर चूर हो असहाय सी झूल रही है। मृत्यु का भय सभी प्राणियों को बचाव के लिए प्रेरित करता है, बिना परिणाम जाने। घर के मालिक बड़बड़ाते हुए छुड़ाने के यत्न में बाएं हाथ से चिड़िया को सहारा दे दाएं हाथ से बाल की गांठ तोड़ने लगे। बड़बड़ाहट की आवाज पर पत्नी घर के अंदर से दौड़ी आई। शहर के जीवन का अपना ही भय है। यहां की स्थिति समझ वह ग्लानि से भर उठी। हो न हो चिड़ियां मेरे ही बाल में उलझ इस प्राणघातक परिणाम तक पहुंच गई हो। घर के अंदर से तेजी से छोटी कैंची ला पति के हाथ में थमाते हुए वह भी अपना हाथ बढ़ाई।

इस उलझन से छूट पक्षी कुछ सेकेंड के आराम के पश्चात् फुर्र से उड़ गया। इस यह फुर्र की ध्वनि पति-पत्नी दोनों के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं थी।

करीब-करीब पखवाड़े भर बाद एक वह चिड़िया लगातार चक्कर लगाने लगी। धीरे-धीरे अमरूद की डाल में लटकता एक घोंसला अपना आकार लेने लगा। पहले तो इसका मुंह घर की ओर ही खुलता था पर पता नहीं भय या एकांत के भाव से घोंसले के गोल प्रवेश मार्ग को वह चारदीवारी की तरफ घुमा ले गई। अब उसकी हलचल भी कम होने लगी या कार्यव्यस्तता के कारण उधर ध्यान ही न गया हो।

उस दिन अचानक नीली चिड़िया के नवजात के आगमन ने पूरे परिवार को खुश कर दिया। मानो आज के लिए ही ये पेड़ लगाए गए थे।

एक दिन अचानक लगा घोंसला उजड़ा हुआ है। पिता के माथे की लकीरें गहरी हो गईं। पिता ने दोनों बेटों को बुलाकर पूछताछ की। कहीं से भी उजड़े घोंसले का सूत्र हाथ नहीं लगा। अरे मानव के बच्चों को चैन कहां? बेचारे दिन-रात माता-पिता के सपने को पूरा करने में अपने बचपन को महीन पिसते देख बड़े हो रहे हैं। पिता को फिर भी चैन नहीं मिला। कहीं कोई चारदीवारी के पार से अमरूद तोड़ने में घोंसला को तो क्षति नहीं पहुंचा बैठा? किसी ने बताया वह चिड़िया बच्चे के जन्म के बाद घोंसला उजाड़ दूर चली जाती है। फिर भी मन बेचैन हो रहा था।

तीन-चार दिन बाद दो नीली चिड़िया एक साथ अमरूद की डाल पर फुदक रही थीं, उसमें से एक थोड़ी छोटी थी। कभी अमरूद के पेड़ से लटक रही लताओं के फूलों में घुसती, कभी कीट पर लपकती। मानो वह अपने सफल प्रजनन की सूचना देने आई हो। घर का तनाव स्वतः कम हो गया, पिता ने आश्वस्ति की सांस ली। ❑

–बिहार विधान परिषद
पटना-15

हिंदी दिवस पर विशेष

बच्चों के गीत

–विष्णु भट्ट

14 सितम्बर सन् 1949 को संविधान सभा के निर्णय के पालन में संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी घोषित की गई। इसीलिए हर वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाने लगा।

साथियो! हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सर्व प्रथम वर्णमाला में स्वर और व्यंजन के अक्षरों का तुमने पढ़ा ही होगा? बच्चों स्वर और व्यंजन पर आधारित दो गीत प्रस्तुत हैं वर्तमान में प्रचलन में स्वर जिन्हें तुमने पढ़ा होगा। ये हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः। गीत है: "बच्चों तुमको लेना यह सीख"

अ से अनार, आ से आम।
बच्चों ऐसे करना काम।।
जिनसे ही ऊंचा तुम्हारा नाम।
ना हो तुम कभी बदनाम।।
बच्चों तुमको लेना यह सीख...
इ से इमली ई से ईख।
तुमको ज्ञान भरी दे सीख।।
कभी ना तुम लेना भीख।
ना निकले कभी मुंह से चीख।।
बच्चों तुमको लेना यह सीख...
उ से उल्लू, ऊ से ऊंट।
पढ़ना तुम ना बनना ठूंठ।।
कभी ना बोलो तुम झूठ।
चाहे तुम रहे हो टूट।।
बच्चों तुमको लेना यह सीख...
ए से बने एक, ऐ से ऐनक।
तुम तो हो इस देश के सैनिक।।
ऊंचा नाम करो इसको दैनिक।
सब ओर रह इसकी रौनक।।
बच्चों तुमको लेना यह सीख...

ओ से ओखली, औ से औरत।
पाना है तुमको ऊंची शौहरत।।
नहीं देखना कोई मुर्हुत।
फलो-फूलों ये आज की जरूरत।।
बच्चों तुमको लेना यह सीख...
अं से अंगूर, अः से खाली।
तुम तो हो रस बगिया के माली।।
सब हंसते हुए बजाओ ताली।
चेहरे पर चमके सबके लाली।।
बच्चों तुमको लेना यह सीख...

व्यंजन पर आधारित गीतः-
यह है अक्षरों की कहानी

क से कबूतर, ख से खरगोश।
बच्चों तुमको पाना है जोश।
ग से गधा, घ से घर।
बच्चों न रहे तुम्हे किसी का डर।।
ड़ से कुछ बनता नहीं।
है इसकी पहचान यही।।
च से चम्मच, छ से छतरी।
यह बात किसी को ना अखरी।।
ज से जहाज़, झ से झंडा।
सदा रहे ऊंचा तिरंगा झंडा।।
ञ से कुछ बनता नहीं।
है इसकी पहचान यही।।
ट से टमाटर, ठ से ठठेरा।
सबको अच्छा लगता है सवेरा।।
ड से डलिया, ढ से ढक्कन।
तुमको तो लगता अच्छा मक्खन।।
ण भी होता है खाली।

है इसकी पहचान यही।।
त से तराजू, ध से धन।
पढ़ने में सब लगाना मन।।
द से दवात, ध से धनुष।
ये कहते हैं सब मनुष्य।।
न से बनता है नल।
कहता है बढ़ता चल।।
प से पहिया, फ से फल।
मन कहता है चलता चल।।
ब से बंदर, भ से भंवरा।
देश हमारा बने सुनहरा।।
म से बने मन।
खुश रहे जन-जन गण-मन।।
य से यज्ञ, र से रस्सा।
सबको मिले अपना हिस्सा।।
ल से लट्टू, व से वन।
खुश रहे सबका मन।।
श से शलगम, ष से षटकोण।
तुमको रहना है हंसमुख।।
स से संदूक, ह से हल।
रहे मन सदा चंचल।।
क्ष से क्षत्रिय, त्र से त्रिशूल।
राह से उठाना सभी के शूल।।
ज्ञ से ज्ञानी, नहीं इनका कोई सानी।
यही है इन अक्षरों की कहानी,
जिसे हम सबने है जानी और पहचानी।। ❑

–1एम9, गायत्री नगर,
हिरन मगरो, सेक्टर-5, उदयपुर,
राजस्थान-313002

विनोबा भावे : प्रथम सत्याग्रही

प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा 31 जुलाई, 2019 को विभाग की पुस्तक दीर्घा में सांय 4 से 5.30 बजे तक 'आचार्य विनोबा भावे: प्रथम सत्याग्रही' पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। महात्मा गांधी की 150 जयंती के लिए आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री दिपंकर श्री ज्ञान, निदेशक, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति थे। इस संगोष्ठी में श्री दिपंकर श्री ज्ञान महोदय ने गांधी के प्रर्वतक आचार्य विनोबा भावे के जीवन, विचार तथा गांधी जी और उनके संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने आचार्य विनोबा भावे को महात्मा गांधी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बताते हुए उनकी विचारधारा और जीवन शैली से अवगत कराया।

इस अवसर पर श्रोताओं ने श्री दिपंकर श्री ज्ञान से महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे को लेकर अनेक प्रश्न किए और अपनी जिज्ञासा शांत की।

इस संगोष्ठी में प्रकाशन विभाग की प्रधान महानिदेशक, वरिष्ठ अधिकारी गण, विभाग के कर्मचारी तथा आमंत्रित श्रोता उपस्थित थे।

शहीद भगत सिंह
अदालत में

–वीरेन्द्र सिंह

दिल्ली जेल में 4 जून, 1929 को मुकदमे की सुनवाई सेशन जज मिस्टर मिडलटन की अदालत में आरंभ हुई। सरकारी गवाहों के बयान के बाद भगत सिंह ने अपनी और बटुकेश्वर दत्त की ओर से 6 जून, 1929 को बयान दिया, उसके कुछ अंश यहां दिए जा रहे हैं :

''हमारे विरुद्ध गंभीर अपराधों के आरोप लगाए गए हैं, हम इस समय अपने आचरण का स्पष्टीकरण करना चाहते हैं।''

इस संबंध में निम्न प्रश्न उठते हैं :

1. क्या सदन में बम फेंके गए थे? यदि ऐसा हुआ तो इसका क्या कारण था?
2. निम्न न्यायालय ने जिस प्रकार आरोप लगाया है वह यही है अथवा नहीं?

''पहले प्रश्न के आधे भाग के लिए हमारा उत्तर स्वीकारात्मक है परंतु कुछ साथियों ने घटना का असत्य विवरण प्रस्तुत किया है। हम बम फेंकने का दायित्व स्वीकार करते हैं, अतः हम यह चाहते हैं कि हमारे इस वक्तव्य का सही मूल्यांकन किया जाए। सार्जेंट टेरी का यह कथन है कि उन्होंने हम में से एक के हाथ से पिस्तौल छीन ली, जानबूझ कर बोला गया असत्य है।''

वास्तव में जिस समय हमने आत्मसमर्पण किया उस समय हम दोनों में से किसी के पास पिस्तौल नहीं थी। जिन साक्षियों ने यह कहा कि उन्होंने हमें बम फेंकते हुए देखा, उन्हें भी बे-सिर-पैर का झूठ बोलने में कोई झिझक नहीं आई। हमें आशा है कि जिन लोगों का ध्येय न्यायिक शुद्धता तथा निष्पक्षता की

रक्षा करना है वे इन तथ्यों से स्वयं निष्कर्ष निकालेंगे।

''मानव मात्र के प्रति हमारा प्रेम किसी से भी कम नहीं है, अत: किसी व्यक्ति के प्रति विद्वेष रखने का प्रश्न ही नहीं उठता, इसके विपरीत हमारी दृष्टि में मानव जीवन इतना अधिक पवित्र है कि उस पवित्रता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। कुछ लोगों ने हमें देश के लिए अपमानजनक और पागल बताया है। हम नम्रतापूर्वक यह दावा करते हैं कि हमने इतिहास, अपने देश की परिस्थिति तथा मानवीय आकांक्षाओं का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया है। हम पाखंड से घृणा करते हैं। हम उसे सरकारी बाक्स में फेंकते हैं जहां गंभीरतापूर्ण लोग बैठे थे और आखिरकार हम यह भी कर सकते थे कि उस समय अध्यक्ष की गैलरी में बैठे हुए सर जॉन साइमन पर चोट करते जिसके दुर्भाग्यपूर्ण कमीशन से देश के सभी पढ़े-लिखे लोग घृणा करते हैं। परंतु हमारा प्रयोजन यह सब नहीं था और बमों का जिस प्रयोजन के लिए निर्माण किया था, उन्होंने उससे अधिक काम नहीं किया। इसमें कोई चमत्कार नहीं था, हमने जानबूझ कर यह ध्येय निश्चित किया था कि सभी लोगों का जीवन सुरक्षित रहे।''

भगत सिंह और दत्त यदि चाहते तो बम फेंकने के बाद आसानी से भाग सकते थे, परंतु उनका उद्देश्य तो क्रांति को जनता तक पहुंचाना था और इसके लिए आवश्यक था कि वे स्वयं को गिरफ्तार करवा कर अदालत के माध्यम से अपने विचारों को सरकार और जनता के सामने रखें। उन्होंने आगे कहा:

"इसके पश्चात् हमने अपने कार्य के परिणामस्वरूप दंड प्राप्त करने के लिए स्वेच्छा से अपने आपको प्रस्तुत कर दिया और साम्राज्यवादी शोषकों को यह बता दिया कि वे व्यक्तियों को कुचल सकते हैं, विचारों की हत्या नहीं कर सकते। दो महत्वहीन इकाइयों को कुचल देने से राष्ट्र नहीं कुचला जा सकता। हम इस ऐतिहासिक निष्कर्ष पर बल देना चाहते हैं कि फ्रांस का क्रांतिकारी आंदोलन कुचला नहीं जा सका। फांसी की रस्सी और साइबेरिया में बिछाई गई माइन रूसी क्रांति की ज्वाला को नहीं बुझा सकी। अत: यह भी असंभव है कि अध्यादेश और सुरक्षा विधेयक भारतीय स्वाधीनता की लपटों को बुझा सकें।"

न्यायालय में भगत सिंह से पूछा गया कि क्रांति से वह क्या समझते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा "क्रांति में घातक संघर्षों का अनिवार्य स्थान नहीं है, न उसमें व्यक्तिगत रूप से बदला लेने की ही गुंजाइश है। क्रांति बम और पिस्तौल की संस्कृति नहीं है। क्रांति से हमारा प्रयोजन यह है कि अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन होना चाहिए।

"एक ओर सबके लिए अन्न उगाने वाले कृषक सपरिवार भूखे मर रहे हैं, सारी दुनिया के बाज़ारों में कपड़े की पूर्ति करने वाले बुनकर अपने और अपने बच्चों के शरीर को ढांपने के लिए पूरे वस्त्र प्राप्त नहीं कर पाते भवन निर्माण, लोहार और बढ़ईगिरी के कामों में लगे लोग शानदार महलों का निर्माण करके भी गंदी बस्तियों में रहते और मर जाते हैं, दूसरी ओर पूंजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले अपनी सनक पूरी करने के लिए करोड़ों रुपया पानी की तरह बहा रहे हैं। यह भयंकर विषमताएं और विकास के अवसरों की कृत्रिम समानताएं समाज को अराजकता की ओर ले जा रही हैं।

"अत: क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है और जो लोग इस आवश्यकता को अनुभव करते हैं उनका यह कर्त्तव्य है कि वे समाज को समाजवादी आधारों पर पुनर्गठित करें। जब तक यह नहीं होगा और एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का तथा एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण होता रहेगा, जिसे साम्राज्यवाद कहा जा सकता है, तब तक उससे उत्पन्न होने वाली पीड़ाओं और अपमानों से मानव जाति को नहीं बचाया जा सकता।

"क्रांति से हमारा प्रयोजन अंततः एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था कायम करना है जिसको इस प्रकार से घातक खतरों का सामना न करना पड़े और जिसमें सर्वधारा वर्ग की प्रभुता को मान्यता दी जाए।"

वे आगे कहते हैं, "क्रांति मानव जाति का जन्मजात अधिकार है। स्वतंत्रता सभी मनुष्यों का एक ऐसा जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे किसी भी स्थिति में छीना नहीं जा सकता। श्रमिक वर्ग समाज का वास्तविक आधार है। लोक-प्रभुता की स्थापना श्रमिकों का अंतिम ध्येय है। इन आदर्शों तथा इस आस्था के लिए हम उन सब कष्टों का स्वागत करेंगे जो हमें न्यायालय द्वारा दिए जाएंगे। क्रांति की इस वेदी पर हम अपना यौवन धूपबत्ती की भांति जलाने के लिए सन्नद्ध हुए हैं। इतने महान ध्येय के लिए कोई भी बलिदान बड़ा नहीं माना जा सकता। हम क्रांति की उन्नति की संतोषपूर्वक प्रतीक्षा करेंगे। इंकलाब-जिंदाबाद।"

इस वक्तव्य में भगत सिंह ने नई समाज व्यवस्था की रूपरेखा दी और उन्होंने ही पहली बार समाजवादी समाज की घोषणा की। जब यह वक्तव्य समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ तो देशवासियों का ध्यान भगत सिंह पर केंद्रित हो गया। उनकी जोशीली भाषा, नई विचार पद्धति और कष्ट झेलने के लिए हंसते-हंसते आगे बढ़ना तथा बलिदान के प्रति इतना साहस और निर्लिप्तता, इस सबके कारण वे सबके प्रिय हो गए।

दस जून, 1929 को केस की सुनवाई समाप्त हो गई और उसके तुरंत बाद भगत सिंह को मियांवाली जेल में और बटुकेश्वर दत्त को लाहौर सेंट्रल जेल में भेज दिया गया।

हाईकोर्ट में अपील

असेंबली बम कांड के मुकदमे में बचाव का प्रयत्न बिल्कुल नहीं किया गया था फिर भी सेशन जज के फैसले की अपील हाईकोर्ट में कर दी गई। यह भी भगत सिंह की योजना का ही एक अंग था। वे अपने विचारों को जनता तक पहुंचा कर जनमानस में क्रांति लाने के प्रयास में लगे थे, अतः यह एक और मौका था कि वे हाईकोर्ट के मंच पर खड़े होकर क्रांति को उभार सकें।

जस्टिस फोर्ड और जस्टिस एडीसन के सामने लाहौर कोर्ट में अपील पेश हुई। भगत सिंह ने दिल्ली की अदालत में बयान देने में अत्यधिक कुशलता का परिचय दिया। यहां तो वे और भी अधिक जोश और उत्साह से बोले। उन्होंने इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया कि बम फेंकते समय उनकी नीयत क्या थी। उस लंबे महत्वपूर्ण बयान के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं।

असेंबली में दो बम फेंके, उनमें किसी भी व्यक्ति की शारीरिक या आर्थिक हानि नहीं हुई, इस दृष्टिकोण से हमें जो सज़ा दी गई है, यह कठोरतम ही नहीं, बदला लेने की भावना वाली भी है। यदि दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए जो जब तक अभियुक्त की मनोभावना का पता न लगाया जाए तो किसी भी व्यक्ति के साथ न्याय नहीं हो सकता क्योंकि उद्देश्य को नज़रों में न रखने पर संसार के बड़े-बड़े सेनापति साधारण हत्यारे नज़र आएंगे, सरकारी कर वसूल करने वाले अधिकारी चोर, जालसाज दिखाई देंगे और न्यायाधीशों पर भी कत्ल करने का अभियोग लगेगा।

यदि उद्देश्य को भुला दिया जाए तो हर धर्म-प्रचारक झूठ का प्रचारक दिखाई देगा और हर-एक पैगंबर पर अभियोग लगेगा कि उसने करोड़ों भोले और अंजान लोगों को गुमराह किया और उस स्थिति में हज़रत, ईसा मसीह गड़बड़ कराने वाले, शांति भंग करने वाले और विद्रोह का प्रचार करने वाले दिखाई देंगे और कानून के शब्दों में खतरनाक व्यक्ति माने जाएंगे। लेकिन हम उनकी पूजा करते हैं इसलिए कि उनके प्रयत्नों का प्रेरक एक ऊंचे दर्जे का उद्देश्य था।

इंकलाब जिंदाबाद और साम्राज्यवाद-मुर्दाबाद का अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा, "इंकलाब-जिंदाबाद" से हमारा यह उद्देश्य नहीं था जो आमतौर पर गलत अर्थ में समझा जाता है। पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते। बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों का सान पर तेज़ होती है और यही चीज़ थी जिसे हम प्रकट करना चाहते थे। हमारे इंकलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों की मुसीबतों का अंत करना है। मुख्य उद्देश्य और उसे प्राप्त करने की प्रक्रिया को समझे बिना किसी के संबंध में निर्णय देना उचित नहीं है। गलत बातें हमारे साथ जोड़ना साफ़-साफ़ अन्याय है।"

बमों के अंदर कितनी शक्ति है, इसकी उन्हें पूरी जानकारी थी और बम इसलिए खाली स्थान पर फेंके गए ताकि किसी को चोट न आए। इस संबंध में स्पष्टीकरण करते हुए भगत सिंह ने कहा, "यदि हमें बमों की ताकत के संबंध में कोई ज्ञान न होता तो हम पंडित मोतीलाल नेहरू, श्री केसकर, श्री जयकर, श्री जिन्ना जैसे सम्माननीय राष्ट्रीय नेताओं की उपस्थिति में क्यों बम फेंकते? हम नेताओं के जीवन को किस तरह खतरे में डाल सकते थे?

"बमों की ताकत के संबंध में हमें निश्चित जानकारी थी, इसी कारण ऐसा साहस किया। जिन बेंचों पर लोग बैठे थे, उन पर बम फेंकना कहीं आसान काम था लेकिन खाली जगह पर बम फेंकना निहायत मुश्किल काम था। अगर बम फेंकने वाले सही दिमाग के न होते, या वे परेशान होते तो बम खाली जगह की बजाय बेंचों पर गिरते। मैं तो कहूंगा कि खाली जगह के चुनाव के लिए जो हिम्मत हमने दिखाई उसके लिए हमें इनाम मिलना चाहिए।"

अंत में उन्होंने कहा, "इन हालातों में माई लॉर्ड, हम सोचते हैं कि हमें ठीक तरह नहीं समझा गया। आपकी सेवा में हम सज़ाओं की कमी कराने नहीं आए बल्कि अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए आए हैं। हम तो चाहते हैं कि न तो हमसे अनुचित व्यवहार किया जाए और न ही हमारे संबंध में अनुचित राय दी जाए। सज़ा का सवाल हमारे लिए गौण है।"

उपरोक्त दोनों बयान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में भगत सिंह को पूरी तरह समझने के लिए इन दोनों बयानों का अध्ययन बहुत ही आवश्यक है। भले ही बयान बहुत महत्वपूर्ण था परंतु सत्ता के नशे में चूर जजों ने इसे स्वीकार नहीं किया और सेशन जज के फैसले को बहाल रखते हुए भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजन्म कारावास का दंड सुना दिया। ❑

प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'अमर शहीद भगत सिंह' से साभार

शिकंजा

–अरनी रॉबर्ट्स

विनय और सतीश जयपुर में दसवीं कक्षा के छात्र थे। दोनों लड़कों के घर एक ही मोहल्ले में थे। दोनों का साथ पढ़ना, साथ ही स्कूल जाना और अधिकतर समय एक-दूसरे के साथ बिताना, यही उनकी दिनचर्या थी। दोनों के घर भी दूर नहीं थे, मात्र कुछ फर्लांग की दूरी पर।

पढ़ाई में दोनों अच्छे थे। विनय गणित विषय में अधिक होशियार था तो सतीश अंग्रेजी में। जिसको भी जिस विषय में कठिनाई आती वे आपस में एक-दूसरे की सहायता करते। विनय और सतीश दोनों को कबड्डी का खेल खेलने में विशेष रुचि थी। वैसे तो वे अन्य खेलों में भी हिस्सा लेते थे, पर कबड्डी खेलने में तो उनका जवाब नहीं था। ऐसे बहुत कम अवसर आते जब उस टीम में जिसमें वे होते हार का मुंह देखना पड़ता हो। उनके विद्यालय के शारीरिक शिक्षक ने उन्हें सलाह दी कि वे अपना पूरा ध्यान उनके पसंद वाले खेल यानि कबड्डी पर ही दें क्योंकि एक ही समय में सब खेलों में दक्षता हासिल कर लेना मुश्किल है। दोनों लड़कों की समझ में यह बात आ गई थी और अब उन्होंने सारा ध्यान कबड्डी पर ही केंद्रित कर दिया था।

इस बार स्तरीय खेल प्रतियोगिता में कबड्डी में उनके स्कूल की टीम फाइनल में विजेता रही थी। अब वे लोग राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता की तैयारी जोर-शोर से कर रहे थे।

विनय के खेलने की विशेषता थी कि वह जब वह दूसरी टीम के पाले में दाम देने जाता तो उसका वार खाली नहीं जाता और एक-दो खिलाड़ियों को वह आउट करके ही आता। और कभी-कभी तो उसको पकड़ने वाले चार-पांच खिलाड़ी भी आउट हो जाते। ऐसा बहुत कम ही होता कि वह विरोधी टीम द्वारा पकड़ा जाता।

दूसरी ओर सतीश में यह विशेषता थी कि प्रतिद्वन्दी टीम के खिलाड़ी की ऐसी मजबूत पकड़ करता कि फिर तो वह खिलाड़ी कितना ही जोर क्यों न लगा ले छुड़ा नहीं पाता था अपने आपको। वह विरोधी टीम के खिलाड़ी को पांव से पकड़ता था और जैसे ही शिंकजा कस जाता और खिलाड़ी बेबस हो जाता तो वह और उसके साथी खिलाड़ी उसे शरीर से पकड़ लेते।

उस दिन सतीश के पिताजी त्रिलोक मेहरा जो वन विभाग में ऑफिस में कार्यरत थे, अपने बेटे से बैंक में उनके खाते में दो हजार रुपये का चेक जमा कराने के लिए दिया। वे बोले 'बेटा सतीश यह चेक मेरे बैंक खाते में जमा करवा देना और बैंक पास बुक में एंट्री भी करवा लाना। मैंने फार्म भरके चेक उसके साथ लगा दिया है।"

'ठीक है पिताजी स्कूल जाते समय चेक बैंक में जमा करवा दूंगा और पास बुक में एंट्री भी करवा लाऊंगा।' ठीक दस बजे सतीश बैंक पहुंच गया। उसके साथ विनय भी था। शनिवार होने के कारण बैंक में कम भीड़ थी। पैसों का लेन-देने करने वाले लोग तो कम ही थे, पर एंट्री करने वाली मशीन के आगे पंद्रह लोगों की पंक्ति थी। विनय पास बुक लेकर लाइन में लग गया और सतीश चेक लेकर संबंधित काउन्टर पर चला गया। बैंक में काम बड़ी शांति से चल रहा था। अचानक चार नकाबपोश काले कपड़ों में हाथों में रिवाल्वर लिए धड़धड़ाते हुए बैंक में घुसे। उन्हें देखकर वहां मौजूद लोगों के होश उड़ गए, वे अनहोनी घटना के बारे में सोचकर लोग सिहर उठे।

लुटेरों में से हाथ का रिवाल्वर हाथ में लहराते हुए कड़कदार आवाज में कहा ''सुनो अपनी जान की खैर चाहते हो तो सब लोग खामोश रहना। किसी ने जरा भी हरकत की तो गोली उसके भेजे को पार कर जाएगी। हम किसी का खून-खराबा नहीं चाहते। अपनी जान प्यारी हो तो अपनी जगह से हिलना भी मत, और हमें अपना काम करने देना।''

किसी ने हिम्मत करके कहा 'तुम लोग लुटेरे हो? ऐसा गलत काम मत करो.... पुलिस आ गई तो तुम बेवजह मारे जाओगे।' दूसरे नकाबपोश ने गुस्से से कहा ''अपना मुंह बंद रख, हमारा क्या होगा इसकी चिंता मत कर। अपनी जान की खैर मना वरना यही ठंडा कर देंगे।"

उनमें से एक नकाबपोश ने पहले ही से बैंक के सुरक्षा गार्ड को वश में करके उसकी बंदूक छीन ली थी और उसके हाथ-पांव बांध दिए थे। एक नकाबपोश बैंक मैनेजर के कक्ष में घुस गया और टेलीफोन के तार काट दिए और उसका मोबाइल अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद तिजोरियों की चाबियां भी छीन लीं। फिर मैनेजर को साथ लेकर वह तिजोरियों वाले कक्ष में चला गया। अन्य नकाबपोश ने वहां मौजूद लोगों के मोबाइल छीन लिए और बैंक कर्मचारियों सहित सबको कब्जे में ले लिया। अब शायद वे जल्दी-जल्दी कैश और लॉकर्स में रखे आभूषण साथ लाए बैगों में भर रहे थे।

इस अफरा-तफरी में विनय और सतीश वहां रखी बेंच के नीचे छुप गए। दोनों लड़कों का दिमाग तेजी से काम कर रहा था कि किस तरह बैंक लुटने से बचाया जाए और बदमाशों को पकड़वाया जाए। अगर जल्दी कुछ नहीं किया तो लुटेरे बैंक का सारा पैसा और लोगों के आभूषण लेकर चंपत हो जाएंगे। पर जरा सी चूक लड़कों को मौत के मुंह में पहुंचा सकती थी।

पांच सात मिनट के अंदर लुटेरों ने सारा केश और लॉर्कस में रखे आभूषण साथ लाए बड़े बैग में भर लिए। चारों लुटेरों में से दो लोगों को हिलने और न चिल्लाने की धमकी देते हुए मुख्य दरवाजे से बाहर निकल गए। कुछ ही क्षण बाद वह लुटेरा बाहर निकलने लगा जिसके कंधे पर लूटे गए नोटों और आभूषणों का बैग था। बस इसी क्षण की दोनों लड़कों को प्रतीक्षा थी। जैसे ही वह बेंच के पास से गुजरा विनय ने टंगड़ी अड़ा दी। वह लुटेरा बैग सहित धड़ाम से मुंह से बल फर्श गिर पड़ा। इसके बाद दूसरा लुटेरा जो उसके पीछे आ रहा था, सतीश ने फुर्ती से उसका पांव कसके पकड़ लिया वैसे ही जैसे वह कबड्डी खेलते समय प्रतिद्वन्दी खिलाड़ी के साथ करता था। उस लुटेरे ने बहुत हाथ-पांव मारे पर सतीश के हाथों के शिकंजे से वह पांव छुड़ा नहीं सका। आश्चर्यचकित होकर लोग इन निर्भीक लड़कों को देख रहे थे। बैग वाला लुटेरा इस कदर घबरा गया था कि उससे बैंक के चिकने फर्श से उठा नहीं जा रहा था। विनय ने चिल्लाकर लोगों से कहा "अरे आप लोग इस तरह खड़े देख क्या रहे है? पकड़ो इन्हें, मारो.... जाने न दो।" यह सुनते ही लोग उन लुटेरों पर टूट पड़े। बाहर निकल चुके लुटेरों ने देखा कि उनके साथ नहीं आए तो वे घबराकर पुनः बैंक में आए। इस बार लड़कों के साथ-साथ लोग भी तैयार थे। इससे पहले कि वे माजरा समझ पाते उन्हें लोगों ने घेर लिया और लात-घूंसों की बौछार करते हुए उन सबके हाथ-पांव बांध दिए।

बाहर लुटेरों की गाड़ी में बैठा ड्राइवर गाड़ी भगाना ही चाहता था कि लोगों ने उसको भी बाहर खींच लिया। बैंक लुटने से बच गया।

बैंक के मैनेजर और वहां उपस्थित लोगों ने इन दोनों बहादुर लड़कों की पीठ ठोंककर उन्हें शाबाशी दी। ऐसे बहादुर लड़कों का यह साहसी कारनामा अखबारों व टी.वी. न्यूज की सुर्खियां बना। विनय और सतीश को बैंक की ओर से तो पुरस्कृत किया ही गया, साथ ही राज्य सरकार ने भी पचास-पचार हजार की राशि बतौर इनाम उन्हें प्रदान की। ❑

–पोस्ट ऑफिस रोड,
भीमगंजमण्डी कोटा जं.-324002
(राज.)

श्रद्धांजलि

मिठाई की चोरी और बत्ती बंद

–विमला मेहता, वीरेन्द्र राज मेहता

मदर टेरेसा का बचपन बड़ा सुखद था। माता, भाई और बहन के लाड़-दुलार में पली एग्नेस बचपन में गोलमटोल, गुदगुदी और गोरी-गुलाबी थीं। अत: उन्हें एग्नेस के नाम से न पुकार कर 'गौंझा' के नाम से संबोधित किया जाता था। 'गौंझा' अर्थात् फूल की कली...।

गौंझा के बड़े भाई लाजर को मिठाई, केक, जैम, चाकलेट आदि खाने का बड़ा शौक था। माता द्वारा मिले अपने हिस्से से संतुष्ट न होकर लाजर सदैव मिठाई चुराने की ताक में रहते थे।

जब माता सोने के लिए अपने शयन कक्ष में चली जाती तो लाजर चुपचाप दबे पांव रसोई में घुस जाते। केक, पेस्ट्री, चाकलेट आदि चुराकर खाते थे। और कुछ नहीं मिलता तो जैम चुराकर चाट जाते थे। पीछे-पीछे बड़ी बहन भी चली जाती थी। वे दोनों अपनी छुटकी बहन को भी मिठाई की चोरी में सम्मिलित करना चाहते थे। परंतु बालिका गौंझा को यह सब अच्छा नहीं लगता था। क्योंकि माता ने एक दिन बातों ही बातों में कहा था–'छुपकर किया हुआ काम अनुचित है। ईश्वर अपनी हजार आंखों से सर्वत्र देखता रहता है।'

बालिका गौंझा अपने बड़े भाई-बहन के साथ चोरी में कभी शरीक नहीं हुई। गौंझा ने एक दिन शनिवार की आधी रात को अपने भाई और बहन को डटकर केक खाते हुए देखकर कहा, "मां कहती है कि यदि सुबह के मास (प्रार्थना) में सम्मिलित होना है तो रात्रि बारह बजे के बाद कुछ नहीं खाना चाहिए।" भाई और बहन ने उसकी एक न सुनी। परंतु उन्होंने कभी इन बातों की शिकायत अपनी माता से नहीं की। मां का कहना था कि शिकायत करना बुरी बात है। बालिका के हृदय पर माता के विचारों का गहरा प्रभाव था। पिता तो उसी समय चल बसे थे जिस समय 'फूल की कली' सात वर्ष की मासूम बालिका थी।

एक दिन पड़ोस के एक शरारती और गंदी आदतों वाले लड़के के साथ अपने तीनों बच्चों को खेलते देख मां को बड़ी चिंता हुई। उन्होंने एक उपाय सोचा। वे बाजार से सेब

की एक टोकरी खरीद लाईं। साथ में सड़क पर पड़ा एक सड़ा सेब भी उठाकर लाईं। उसी रात मां तीनों बच्चों को लेकर बैठ गई। उन्होंने छुटकी गौंझा से कहा, "ताजे सेबों के बीचोंबीच इस सड़े सेब को रख दो।" टोकरी को ढककर एक ओर रख दिया गया।

कुछ दिन बाद मां ने सेब की टोकरी मंगाई। तीनों बच्चों के सामने टोकरी का ढक्कन हटाया गया। टोकरी के सारे ताजे सेब सड़ चुके थे।

मां ने समझाया, "मेरे प्यारे बच्चों! एक गंदा सेब सारे सेबों को सड़ा देता है। इसी प्रकार गंदी आदतों वाला एक बच्चा सबकी आदतें गंदी कर देता है।" उस दिन के बाद तीनों बच्चों ने सदैव शिष्ट और शालीन बच्चों के साथ ही मित्रता की।

बालिका गौंझा के पिता निकोलस बॉजाजु के निधन के बाद मां ने बड़ी किफायत से बच्चों को पाला-पोसा और पढ़ाया-लिखाया। निकोलस अच्छा व्यापार छोड़ गए थे। वह एक प्रसिद्ध ठेकेदार थे। उनका बनाया हुआ थिएटर युगोस्लाविया के स्कोपजे शहर में आज भी है। मकान तो बच गया परंतु व्यापार में निकोलस के भागीदार ने बहुत बेइमानी की। फलस्वरूप गौंझा की माता के पास एक धेला भी नहीं बचा।

मां बहुत सुंदर कशीदाकारी करती थीं। उन्होंने कशीदाकारी किए हुए कपड़ों का छोटा-सा व्यापार आरंभ किया। उनकी मेहनत, ईमानदारी तथा मृदु व्यवहार की वजह से व्यापार चल निकला। सभी बच्चों का लालन-पालन आसानी से हो गया। मां चाहती थीं कि बच्चे अपने पिता की कमी कभी महसूस न करें। वह किसी भी प्रकार का अपव्यय पसंद नहीं करती थीं। बिजली, पानी, भोजन अथवा कपड़ों का वे समझदारी से उपयोग करती थी। एक बार तीनों बच्चे रात देर तक कैरम खेलते रहे। फिर गपशप का सिलसिला चला। दूसरे दिन छुट्टी थी। सुबह उठकर स्कूल जाने की चिंता नहीं थी।

गौंझा बड़े मजे से अपनी सहेलियों की बातें बता रही थी। बात-बात पर डांटने वाली अध्यापिका की नकल उतार कर खिलखिला रही थी। दूसरे कमरे में मां कशीदाकारी करते हुए सब सुन रही थीं।

अचानक बच्चों के कमरे की बत्ती बुझ गई। तीनों बच्चों ने देखा कि सड़क पर और पड़ोस में पूरी रोशनी थी। बच्चे मां के कमरे में गए तो वहां पर बत्ती जल रही थी।

मां ने कहा, "बत्ती मैंने बुझाई है। दूसरों की आलोचना और नकल करने के लिए बिजली का खर्च मुझसे सहन नहीं होगा। ऐसी बेकार बातों के लिए बिजली जलाना उसका दुरुपयोग करना है।"

मां ने समझाया, "किसी के व्यक्तिगत जीवन के बारे में बातें करना और आलोचना करना सभ्य लोगों का काम नहीं है।" बच्चों ने मां की बात गांठ बांध ली।

बालिका गौंझा के आने वाले जीवन को बचपन की इन सुंदर यादों ने बहुत प्रभावित किया। किफायत, सादगी और नम्रता उनके जीवन में घुलमिल गई। मां के चरित्र की छाप बालिका गौंझा के जीवन पर काफी गहरी पड़ी। बालिका गौंझा के ये सदगुण बड़ी होने पर संन्यासिनी मदर टेरेसा के जीवन को सदैव प्रेरित करते रहे। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'मदर टेरेसा : प्रेरक प्रसंग' से साभार

मन भर जलेबी

–विजय के. सिंह

एक था महेन्द्र। बहुत ही चालाक था वह। अपनी चतुराई के कारण वह गांव का सरपंच भी बना हुआ था। उसकी चतुराई के आगे बड़े से बड़ा चालाक भी मात खा जाता था। एक दिन वह अपने मित्रों के साथ चौपाल पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। तभी एक साथी ने कहा–'चौधरी साहब, अपनी चतुराई के बहुत से किस्से बघारते हो पर हमने एक भी नहीं देखा। यह क्या बात हुई? अपना कोई ऐसा कारनामा हमें भी दिखाओ ताकि हम आपकी बुद्धिमानी का लोहा मान जाएं।'

महेन्द्र ने हंसकर कहा–'अच्छा ऐसी बात है तो चलो दिखाता हूं कि मैं क्या कर सकता हूं? और ऐसे ही नहीं, तुम्हें मैं दावत भी खिलाऊंगा और एक पैसा भी खर्च नहीं होगा।' पास बैठे साथी ने कहा–'अच्छा भाई, ऐसा है तो फिर क्या देरी?' बस इतना कहना था कि चौधरी महेन्द्र दोनों साथियों को साथ ले, चल पड़े दिल्ली की ओर। दोपहर होते-होते तक आ पहुंचे, दिल्ली के एक गांव नजफगढ़ में। तेज भूख लगी थी। वैसे साथ मे खाना-गांव के किनारे एक हलवाई की दुकान पर गरम-गरम जलेबियां निकल रही थीं। देखकर उन तीनों के मुंह में पानी आ गया। मगर जेब में पैसे कम थे। खरीदकर जलेबियां खाएं कैसे? महेन्द्र ने दोस्तों से कहा–'चलो कुछ करते है। अब तो पेट भर जलेबियां खानी ही हैं।

तीनों हलवाई की दुकान पर जाकर खड़े हो गए और चुपचाप गरम-गरम जलेबियों से भरी परात की ओर टकटकी बांधकर देखने लगे। हलवाई ने उन्हें उठाईगीर समझा। डांटकर बोला– ''कैसे खड़े हो, क्या लेना है?'' महेन्द्र बोला– ''भाई नाराज क्यों होते हो? अगर कुछ लेना न होता तो यहां क्यों आते? वैसे तुम जलेबी अच्छी

बनाते हो। भाई वाह, ऐसे जलेबियां पहली बार देखी है।'' अपनी प्रशंसा सुनकर हलवाई बोला- ''कितनी तोल दूं? सेर या सवा सेर।''

''अब सेर या सवा सेर से तो हमारा काम चलने से रहा। भाई, हम जलेबियां खाएंगे तो मन भर। इससे कम में हमारा काम नहीं चलेगा।''

महेन्द्र की बात सुन हलवाई चौंका। फिर गौर से उनकी ओर देखकर हंसा। बोला- ''तुम खाओगे मन भर जलेबी। अरे देखने में तो तुम सीकड़ी पहलवान से लगते हो। मन भर तो तुम तीनों का वजन भी नहीं फिर मन-भर जलेबियां कैसे खा सकते हो?' महेंद्र ने मुस्कराकर अपने साथियों की ओर देखा। फिर हलवाई से कहा- ''फिर तो हो जाए शर्त। अगर मन-भर जलेबियां हम नहीं खा पाए तो तुम्हें जुर्माने के सौ रुपये और जलेबियों की कीमत देंगे। अगर हमने मन भर जलेबियां खा लीं तो तुम हमको सौ रुपये दे देना।''

हलवाई यह शर्त सुनकर बहुत खुश हुआ। सोचने लगा- ''आज अच्छे मूर्ख फंसे।'' उसने आसपास के दो-चोर लोगों को गवाह के नाम पर बुला लिया। और भी बहुत से लोग इस तमाशे को देखने के लिए आ गए। शर्त का दौर शुरू हुआ।

वे तीनों पालथी मारकर जलेबियां खाने बैठ गए। हलवाई ने तीन बड़ी तरतरियों में जलेबियां तोलकर उनके आगे रख दीं। तीनों जलेबियां खाने लगे। इस तरह तीन-तीन तश्तरियां जलेबी वे खा गए। इसके बाद महेन्द्र ने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा- ''हलवाई जी, अब मन भर गया और जलेबियां नहीं चाहिए।'' हलवाई बोला- ''बस, अभी।''

''तुम लोगों ने दस किलो जलेबियां भी नहीं खाई।'' महेन्द्र बोला-''भाई, इस तराजू की तोल की बात थोड़े ही कही थी हमने। हमारा कहना था कि हम मन भर जलेबियां खाएंगे। अब हमारा मन भर गया। क्यों भाइयों, मैंने झूठ तो नहीं कहा।''

महेन्द्र ने वहां खड़ी भीड़ की ओर देखकर कहा। बात ठीक थी शर्त में सिर्फ मन भर जलेबियां खाने की बात थी। आखिर हलवाई को हार माननी पड़ी। चौधरी महेन्द्र सौ रुपये लेकर, पेट पर हाथ फिराता, हलवाई को धन्यवाद देता हुआ मित्रों से बोला-''जलेबियां तो जीम लीं। अब दिल्ली भी देख ली जाए।''

मित्रों ने कहा-''चौधरी, पेट जरा ज्यादा ही भर गया है। खटिया पर पसरकर सोने का मन चाह रहा है। क्यों न गांव लौट चलें।'' महेन्द्र बोला-''यह भी ठीक है। मन भर जलेबियां खाई, तो मन-भर नींद लेना भी जरुरी है। चलो, गांव ही चलते हैं।'' ❑

1385/13, गोविन्द पुरी,
कालका जी, नई दिल्ली-110019

सफर पर निकला चंद्रयान-2

–मंजू चौहान

चंद्रयान-2 भारत का एक महत्वाकांक्षी और किफायती मिशन है। इस मिशन के जरिए भारत दुनिया के उन चंद देशों में शुमार हो जाएगा जिन्होंने चांद पर साफ्ट लैंडिंग की है। इनमें रूस, अमेरिका और चीन के बाद चौथा नंबर भारत का होगा। दरअसल, पिछले 50-60 सालों में चांद पर कई कई देशों ने अपने मिशन भेजे हैं। इंसान चांद पर उतर चुका है। लेकिन आज भी चांद के बारे में हमारी जानकारी एक फीसदी से ज्यादा नहीं है। चांद का 99 फीसदी रहस्य आज भी बरकरार है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने विगत 22 जुलाई को चंद्रयान-2 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण कर दिया है। चंद्रयान-2 अपने सफर पर निकल चुका है तथा सात सितंबर को इसमें भेजा गया रोवर चांद की सतह पर उतरेगा। चंद्रमा की कक्षा में करीब सौ किलोमीटर की ऊंचाई पर पहुंचने के बाद चंद्रयान-2 तीन हिस्सों में बंट जाएगा। आर्बिटर चंद्रमा की परिक्रमा करेगा, आंकड़े जुटाएगा। जबकि लैंडर के जरिए रोवर को चांद पर उतारा जाएगा। रोवर करीब 14 दिनों (एक चंद्रदिवस) तक चांद की सतह पर घूम-घूम कर आंकड़े एकत्र करेगा और उनका विश्लेषण कर इसरो को भेजेगा।

चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण भू स्थैतिक प्रक्षेपण यान (जीएसएलवी) मार्क-3 से किया गया है तथा चंद्रयान-2 में शामिल आर्बिटर, लैंडर (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान) सभी भारत में ही बने हैं। इसमें कुल 14 पेलोड हैं जिनमें से एक नासा (अमेरिका) का है तथा बाकी 13 भारतीय एजेंसियों के हैं। इस मिशन की लागत भी दुनिया के सभी मिशनों से कम है। कुल 978 करोड़ रुपये का इसमें खर्च आया है। 3,850 किग्रा वजन का चंद्रयान कुल 45475 किमी का सफर तय करेगा।

इन 14 पेलोड में आठ आर्बीटर में हैं। जबकि लैंडर में चार तथा रोवर में दो हैं। रोवर चूंकि चांद की सतह पर चलकर कुछ नमूने एकत्र करेगा और उनका विश्लेषण कर सीधे इसरो को प्रक्षेपित करेगा, इसलिए रोवर के आंकड़ों को सबसे अहम माना जा रहा है। रोवर में भेजे गए दोनों उपकरण इसरो की प्रयोगशालाओं ने खुद बनाए हैं। इसमें एक उपकरण एलआईबीएस है जो किसी भी स्वरूप में मौजूद किसी भी पदार्थ का विश्लेषण करने में समर्थ है। दूसरा एपीएक्सएस उपकरण किसी भी पदार्थ की रसायनिक संरचना का अध्ययन कर सकता है। नासा का उपकरण लेजर रेट्रोरिफ्लेक्टर ऐरे (एलआरए) है। लैंडर में भेजे गए इस उपकरण का काम धरती

और चांद के बीच की दूरी का आकलन करना है। इससे यह पता लगाया जा सकेगा कि लैंडर चंद्रमा में किस स्थान पर उतरा है।

क्यों अहम है चंद्रयान-2

पहली बात तो यह है कि अभियान के जरिए भारत अपनी वैज्ञानिक क्षमता का प्रदर्शन करेगा। वह चांद के ऊपर उपग्रह भेजेगा। उसमें से लैंडर को चांद की सतह पर उतारेगा। और फिर उसमें से रोवर बाहर निकलकर 14 दिनों तक चांद की सतह के आंकड़े एकत्र कर इसरो को भेजेगा। इस पूरे अभियान की सफलता इसरो का अगले कदम तय करेगी जिसमें इंसान को चांद पर भेजने की योजना शामिल है।

दूसरे, आज शोध उपकरणों की गुणवत्ता और आंकड़ों के विश्लेषण करने की क्षमता बढ़ गई है, इसलिए इस प्रकार के शोध चांद पर पहले हो चुकने के बावजूद नई संभावनाएं बनी हुई हैं।

तीसरी और सबसे अहम बात यह है कि भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडर उतार रहा है, इस ध्रुव पर अभी तक कोई अभियान नहीं पहुंचा है। सारे अभियान उत्तरी ध्रुव की तरफ उतरे हैं। इसलिए चांद को लेकर नए तथ्य सामने आने की संभावनाएं ज्यादा हैं।

चौथी महत्वपूर्ण बात यह है कि चांद पर खनिजों की मौजूदगी पता लगाने में यह मिशन अहम होगा। जैसे चांद पर हीलियम होने की संभावना है। यदि ऐसी कोई खोज हो पाती है तो भविष्य में जब भी खनिज संपदाओं का बंटवारा होगा, भारत की उस पर मजबूत दावेदारी होगी।

पांचवी बात, इस मिशन से देश में निर्मित जीएसएलवी और उसमें लगे क्रायोजनिक इंजन की भी यह परीक्षा होगी। यह तकनीक उपग्रह प्रक्षेपण के साथ-साथ अन्तरद्वीपीय मिसाइलों के निर्माण में भी प्रयुक्त होती है। इसलिए चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण रणनीतिक दृष्टि से भी अहम है।

छठी बात यह है कि इससे पहले इसरो ने 2008 में चंद्रयान-1 का प्रक्षेपण किया था। इसमें भेजे गए नासा के एक उपकरण एम-3 के आंकड़ों से इस बात की पुष्टि हुई है कि चांद पर कभी पानी मौजूद था। इससे पूर्व कई मिशन चांद पर गए। लेकिन यह सफलता चंद्रयान-1 के हिस्से में आई है। इस प्रकार चंद्रयान-1 से जिस प्रकार की एक बड़ी उपलब्धि भारत ने अंतरिक्ष कार्यक्रम में हासिल की, वैसे ही उम्मीद चंद्रयान-2 से भी की जा रही है।

भारत के चंद्रयान कार्यक्रम ने जहां चीन के लिए प्रतिस्पर्धा का माहौल पैदा कर दिया, वहीं 50 साल पहले चांद पर पहुंच चुके अमेरिका और रूस को फिर से चंद्र मिशन कार्यक्रम में दिचलस्पी लेने को मजबूर कर दिया है। आज अमेरिका चंद्रमा में अपनी जगह बनाने के लिए आतुर हो चुका है। जबकि रूस ने ऐलान किया है कि 2030 तक चंद्रमा पर इंसान उतारेगा।

चंद्रमा पर साठ के दशक में रूस और अमेरिका ने अनेक मिशन भेजे। रूस ने जहां कई साफ्ट लैंडिंग चांद पर की वहीं अमेरिका ने 15 मिशन चांद पर भेजे जिनमें से छह मिशन में 12 इंसान चांद पर उतरे। लेकिन लौटकर उन्होंने बताया कि चंद्रमा पर धूल और चट्टान के अलावा कुछ भी नहीं है तो अमेरिका ने ये खर्चीले अभियान बंद कर दिए। तब रूस ने भी अपने चंद्रमिशन कार्यक्रम समेट लिए। नतीजा यह हुआ कि 1976 के बाद चांद पर कोई अभियान नहीं उतरा। करीब 37 सालों के बाद 2013 में चीन के चेंग-3 ने चांद पर साफ्ट लैंडिंग की।

दूसरी तरफ चंद्रमिशन कार्यक्रम में आज चीन भारत से भले ही थोड़ा आगे हो लेकिन उसे इस प्रतिस्पर्धा में चंद्रयान ही लाया। चंद्रयान-1 की तैयारी अटल बिहारी वाजपेई सरकार में शुरू हुई थी जिसकी देखादेखी चीन ने भी तैयारी शुरू की। लेकिन चंद्रयान-1 का प्रक्षेपण 2008 में हो सका जबकि चीन ने एक साल पहले ही चेंग-1 भेज दिया। चंद्रयान-2 में और देरी हुई जबकि चीन ने 2013 में चांद पर साफ्ट लैंडिंग कर दी। इधर,

इसी साल चीन ने चांद पर अपना तीसरा मिशन चेंग-4 उतारा है।

चंद्रमिशन कार्यक्रम की प्रतिस्पर्धा में जहां आगे निकल गया, वहीं अमेरिका और रूस की एकाएक दिलचस्पी बढ़ी है। अमेरिका पहले यह मानकर बैठा था कि वहां धूल और चट्टानों के अलावा कुछ नहीं है। लेकिन चंद्रयान-1 में उसने अपने उपकरण भेजकर यह नतीजा निकाला कि वहां बर्फ है। इस बार फिर उसने इसरो से अपने उपकरण भेजने का अनुरोध किया जिसमें उसका एक उपकरण शामिल किया हालांकि भारत इच्छुक नहीं था। लेकिन अमेरिका के अत्यधिक अनुरोध को आखिर स्वीकार कर लिया गया। अमेरिका में शीर्ष स्तर पर हुई बैठकों में निर्णय लिया गया है कि भारत एवं चीन की चांद पर सक्रियता के मद्देनजर वह चांद पर अपनी दावेदारी सुनिश्चित करेगा। दरअसल, जहां चद्रयान-2 उतरेगा, वह चांद का दक्षिणी ध्रुव है जहां अभी तक कोई नहीं उतरा है। इसी प्रकार चेंग-4 ने चांद की दूर की सतह पर जहां लैंडिंग की है, वहां भी अमेरिका या रूस नहीं पहुंच पाए थे।

संभावना है कि भविष्य में अमेरिका अपना चंद्रमिशन कार्यक्रम फिर शुरू कर सकता है। वैसे, खबर है कि जहां अपोलो श्रृंखला के यान चांद पर उतरे थे, उस क्षेत्र को अमेरिका ऐतिहासिक स्थान बताते हुए अपनी मिल्कियत सुनिश्चित करने का रास्ता खोज रहा है।

इसी प्रकार रूस जिसने सबसे पहले चांद में साफ्ट लैंडिंग में सफलता हासिल की लेकिन कभी इंसानों को वहां भेजना जरूरी नहीं समझा। बल्कि रूस की तरफ से अमेरिका के उन अभियानों पर सवाल उठाए जिन्होंने चांद पर कदम रखे। लेकिन वह अब खुद अपने वैज्ञानिकों को चांद पर भेजने के पक्ष में है। उसने 2030 में अपने वैज्ञानिकों को चांद पर भेजने का ऐलान कर दिया है। इसी प्रकार जापान और यूरोपीय यूनियन अपने चंद्रमिशन कार्यक्रम को विस्तार देने में लगे हैं जबकि इस्राइल और बुलगारिया जैसे देश नए शुरू करने की तैयारी में हैं।

कभी चांद पर बसेगा इंसान?

चंद्रयान-2 के प्रक्षेपण के साथ ही देश भर में एक बार फिर यह चर्चा शुरू हो गई है कि क्या कभी चंद्रमा पर इंसान के लिए बसना संभव हो पाएगा? क्या वहां कभी लोग सैर के लिए जा सकेंगे? इसरो के पूर्व चैयरमैन एवं चंद्रयान कार्यक्रम से जुड़े वरिष्ठ वैज्ञानिक के. किरण कुमार कहते हैं कि यह एक दिन जरूर संभव होगा। लेकिन अभी यह नहीं कह सकते हैं कि इसमें कितना समय लगेगा। लेकिन एक दिन इंसान वहां जरूर बसेगा। कुमार के अनुसार यदि अगले कुछ दशकों में चांद पर इंसान की बसने की अवसर पैदा होते हैं तो इससे अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में नई खोजों के मौके मिलेंगे। तब वैज्ञानिक चांद को अपना पड़ाव बना लेंगे और फिर वहां से दूसरे ग्रहों के बारे में शोध करेंगे या अभियान चलाएंगे। तब धरती की बजाय चांद से ही उपग्रह दूसरे ग्रहों के लिए भेजना संभव हो सकता है। ❑

–52 ए, पाकेट सी-2, मयूर विहार फेज-3, दिल्ली-110096

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को फर्रुखाबाद में हुआ था। वह हिंदी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा, उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा-परखा और करुण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। महादेवी वर्मा का निधन 11 सितंबर, 1987 को इलाहाबाद उ.प्र. में हुआ।

बया हमारी चिड़िया रानी

–महादेवी वर्मा

तिनके लाकर महल बनाती,
ऊंची डालों पर लटकाती,
खेतों से फिर दाना लाती
नदियों से भर लाती पानी

तुझको दूर न जाने देंगे,
दानों से आंगन भर देंगे,
और हौज में भर देंगे हम
मीठा-मीठा पानी।

फिर अंडे सेयेगी तू जब,
निकलेंगे नन्हें बच्चे तब
हम आकर बारी-बारी से
कर लेंगे उनकी निगरानी।

फिर जब उनके पर निकलेंगे,
उड़ जाएंगे, बया बनेंगे
हम सब तेरे पास रहेंगे
तू रोना मत चिड़िया रानी
बया हमारी चिड़िया रानी।

तितली से

–महादेवी वर्मा

मेह बरसने वाला है
मेरी खिड़की में आ जा तितली।

बाहर जब पर होंगे गीले,
धुल जाएंगे रंग सजीले,
झड़ जाएगा फूल, न तुझको
बचा सकेगा छोटी तितली,
खिड़की में तू आ जा तितली।।

नन्हें तुझे पकड़ पाएगा,
डिब्बी में रख ले जाएगा,
फिर किताब में चिपकाएगा
मर जाएगी तब तू तितली,
खिड़की में तू छिप जा तितली।।

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

चित्रकथा : परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव

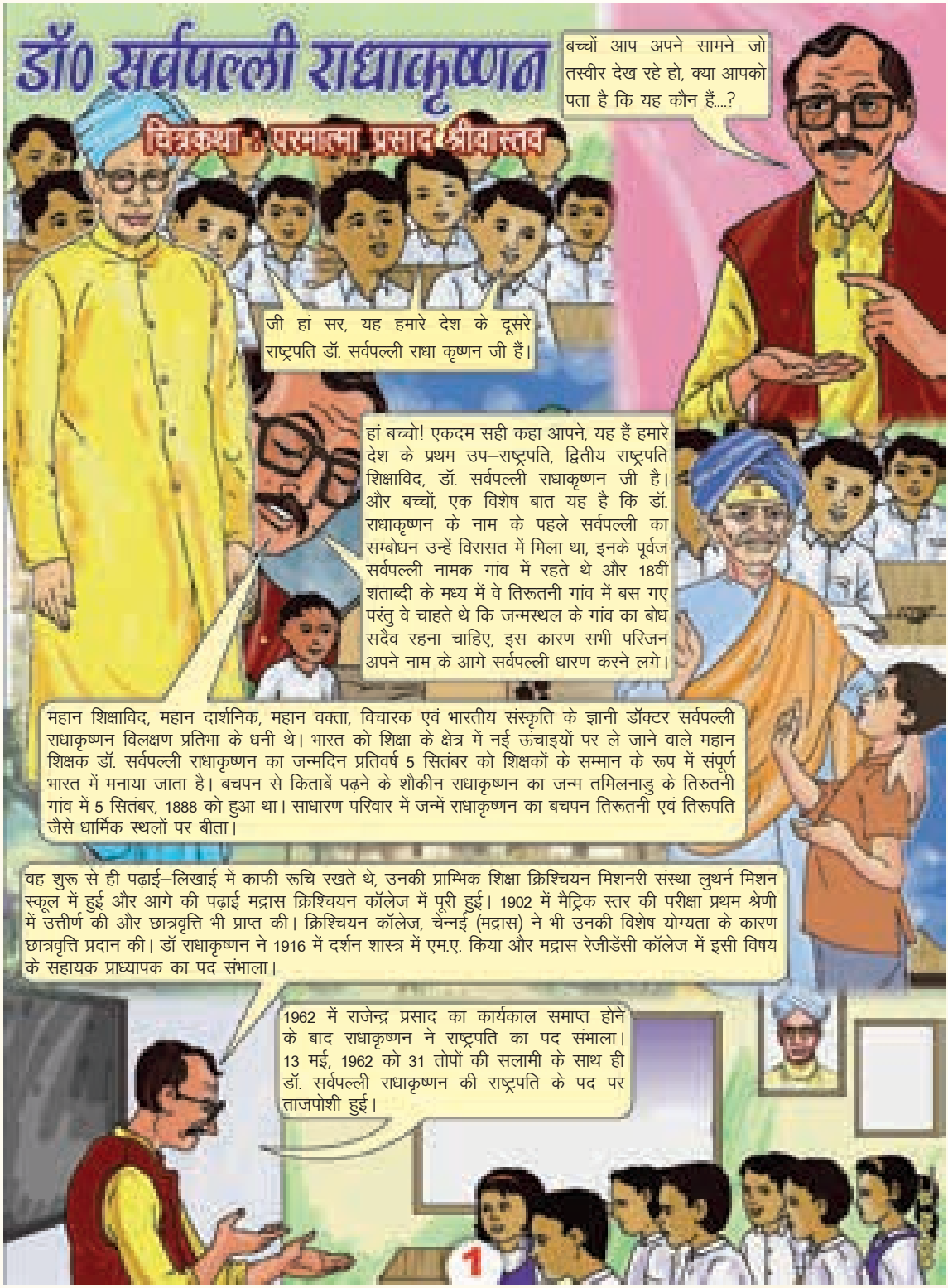

डॉक्टर राधाकृष्णन पूरी दुनिया को ही एक विद्यालय के रूप में देखते थे। उनका विचार था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सही उपयोग किया जा सकता है। अतः विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबंधन करना चाहिए।
अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से भारतीय दर्शन शास्त्र को विश्व के समक्ष रखने में डॉ. राधाकृष्णन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सारे विश्व में उनके लेखों की प्रशंसा की गई। किसी भी बात को सरल और विनोदपूर्ण तरीके से कहने में उन्हें महारथ हासिल थी, यही कारण है कि फिलोसोफी जैसे कठिन विषय को भी वो रोचक बना देते थे। वह नैतिकता व आध्यात्म पर विशेष जोर देते थे; उनका कहना था कि, "आध्यात्मक जीवन भारत की प्रतिभा है।"
1918 में मैसूर में वे रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिले। टैगोर ने उन्हें बहुत प्रभावित किया, यही कारण था कि उनके विचारों की अभिव्यक्ति हेतु डॉक्टर राधाकृष्णन ने 1918 में 'रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन' शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की।
1915 में डॉ. राधाकृष्णन की मुलाकात महात्मा गांधी जी से हुई। उनके विचारों से प्रभावित होकर राधाकृष्णन ने राष्ट्रीय आंदोलन के समर्थन में अनेक लेख लिखे।
डॉ. राधाकृष्णन जी आपने बहुत अच्छा लेख लिखा है, आप यूं ही आगे लिखते रहिए, देश को आपकी बहुत जरूरत है।
2

वे किताबों को बहुत अधिक महत्व देते थे, उनका मानना था कि, "पुस्तकें वो साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।" उनकी लिखी किताब 'द रीन आफ रिलीजन इन कंटेंपररी फिलॉस्फी' से उन्हें अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर पहचान मिली।
उनके व्यक्तित्व का प्रभाव केवल छात्राओं पर ही नहीं वरन देश–विदेश के अनेक प्रबुद्ध लोगों पर भी पड़ा। रूसी नेता स्टालिन के हृदय में फिलॉफ्सर राजदूत डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के प्रति बहुत सम्मान था।
गुरु और शिष्य की अनूठी परंपरा के प्रवर्तक डॉ. राधाकृष्णन अपने विद्यार्थियों का स्वागत हाथ मिलाकर करते थे। मैसूर से कोलकता आते वक्त मैसूर स्टेशन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जय–जयकार से गूंज उठा था। ये वो पल था जहां हर किसी की आंखे उनकी विदाई पर नम थीं।
राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अनेक देशों की यात्रा की। हर जगह उनका स्वागत अत्यधिक सम्मान एवं आदर से किया गया। अमेरिका के व्हाईट हाउस में अतिथि के रूप में हेलिकॉप्टर से पहुंचने वाले वे विश्व के पहले व्यक्ति थे।
3

डॉ. राधा कृष्णन जी ने कई नामी विश्वविद्यालयों को शिक्षा का केंद्र बनाने में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। वे देश की तीन प्रमुख विश्वविद्यालय जैसे– आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय में प्रति कुलपति, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में कुलपति और दिल्ली विश्वविद्यालय में भी कुलपति पद पर योगदान दिया।
उन्हें स्वतंत्रता के बाद संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया। 1952 में जवाहरलाल नेहरू के आग्रह पर राधाकृष्णन सोवियत संघ के विशिष्ट राजदूत बने और इसी साल वे उपराष्ट्रपति के पद के लिए निर्वाचित हुए। 1954 में उन्हें भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
प्रसिद्ध दार्शनिक बटेड रसेल ने डॉ राधाकृष्णन के राष्ट्रपति बनने पर कहा था– "यह विश्व के दर्शन शास्त्र का सम्मान है कि महान भारतीय गणराज्य ने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन को राष्ट्रपति के रूप में चुना और एक दार्शनिक होने के नाते मैं विशेषतः खुश हूं। प्लेटो ने कहा था कि दार्शनिकों को राजा होना चाहिए और महान भारतीय गणराज्य ने एक दार्शनिक को राष्ट्रपति बनाकर प्लेटो को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है। "बच्चों को भी इस महान शिक्षक से विशेष लगाव था, यही कारण था कि उनके राष्ट्रपति बनने के कुछ समय बाद विद्यार्थियों का एक दल उनके पास पहुंचा और उनसे आग्रह किया कि वे 5 सितम्बर उनके जन्मदिन को *टीचर्स डे* यानी शिक्षक दिवस के रूप में मनाना चाहते हैं। डॉक्टर राधाकृष्णन इस बात से अभिभूत हो गए और कहा, मेरा जन्मदिन 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाने के आपके निश्चय से मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करूंगा।" तभी से 5 सितंबर देश भर में शिक्षक दिवस या टीचर्स डे के रूप में मनाया जा रहा है।
"मौत कभी अंत या बाधा नहीं है बल्कि अधिक से अधिक नए कदमों की शुरुआत है।" ऐसे सकारात्मक विचारों को जीवन में अपनाने वाले असीम प्रतिभा का धनी सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन का लंबी बीमारी के बाद 17 अप्रैल, 1975 को प्रातःकाल निधन हो गया। परंतु अपने समय के महान दार्शनिक तथा शिक्षाविद् के रूप में वे आज भी अमर हैं। शिक्षा को मानव व समाज का सबसे बड़ा आधार मानने वाले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शैक्षिक जगत में अविस्मरणीय व अतुलनीय योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।
4

राष्ट्रभाषा

–यू. एस मोहनराव

हमारी भाषा हमारा ही प्रतिबिंब होती है, और यदि आप मुझसे यह कहते हैं कि हमारी भाषाएं इतनी अशक्त हैं कि उनके द्वारा सर्वोत्तम विचार व्यक्त नहीं किए जा सकते तो मैं यह कहूंगा कि हमारा अस्तित्व जितनी जल्दी समाप्त हो जाए उतना ही हमारे लिए अच्छा होगा। क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह कल्पना करता हो कि अंग्रेजी कभी भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है? राष्ट्र पर यह मुसीबत क्यों डाली जाए। मुझे पूना के कुछ प्राध्यापकों के साथ घनिष्ठ बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन्होंने मुझे यह विश्वास दिया कि हर एक भारतीय युवक, चूंकि वह अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा पाता है, अपने जीवन के कम से कम छह बहुमूल्य वर्ष व्यर्थ गंवा देता है। इस संख्या को हमारे स्कूलों तथा कालेजों से निकलने वाले विद्यार्थियों की संख्या से गुणा कीजिए और फिर स्वयं यह पता लगाइए कि राष्ट्र ने कितने हज़ार वर्ष गंवा दिए हैं। हमारे ऊपर यह आरोप लगाया जाता कि हमारे अंदर आगे बढ़ने की शक्ति नहीं है। हमारे अंदर यह शक्ति हो ही कैसे सकती है जबकि हमें अपने जीवन के बहुमूल्य वर्षों को एक विदेशी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने में लगा देना पड़ता है? इस प्रयास में भी हम विफल हो जाते हैं।

वास्तव में, हम अंग्रेजी पर भी अधिकार नहीं प्राप्त कर पाते, कुछ थोड़े-से लोगों को छोड़कर हम लोगों के लिए ऐसा करना संभव नहीं हो सका है। हम अंग्रेजी में अपनी भावनाओं को उतनी अच्छी तरह कभी व्यक्त नहीं कर सकते जितनी अच्छी तरह अपनी मातृभाषा में। हम अपने बचपन के सारे वर्षों की याद कैसे भुला सकते हैं? पर जब हम अपनी उच्चतर शिक्षा, जैसा कि हम उसे कहते हैं, एक विदेशी भाषा के माध्यम से शुरू करते हैं, तब हम ठीक यही काम करते हैं। इससे हमारे जीवन का क्रम भंग हो जाता है जिसके लिए हमें बहुत भारी मूल्य चुकाना होगा।

मैंने लोगों को यह कहते सुना है कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीय ही नेतृत्व कर रहे हैं तथा देश के लिए सभी काम कर रहे हैं। यदि ऐसी बात न होती तो बहुत ही बुरा होता। जो शिक्षा हमें मिलती है वह मात्र अंग्रेजी शिक्षा ही है। हमें उसका कुछ न कुछ फायदा तो अवश्य दिखाना चाहिए। लेकिन मान लीजिए कि हमें पिछले पचास वर्षों में अपनी भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा मिली होती तो आज स्थिति क्या होती। आज भारत स्वतंत्र होता। हमारे शिक्षित लोग अपने ही देश में विदेशियों

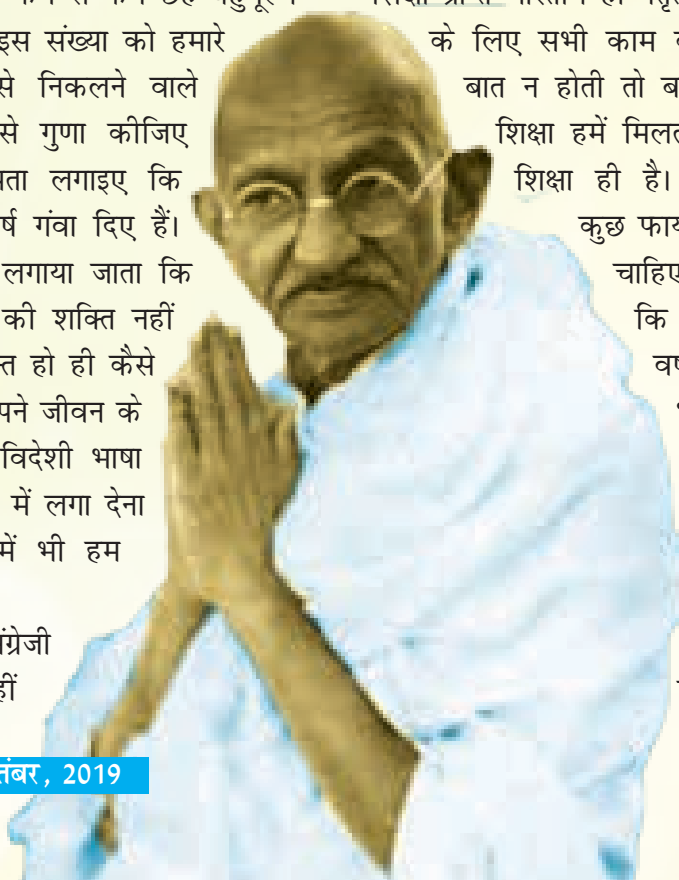

जैसे न होते वरन् उनकी वाणी देश के हृदय को छूती, गरीब से गरीब लोगों के बीच वे जो कुछ हासिल करते वह राष्ट्र की एक विरासत होती। आज हमारी पत्नियां तक हमारे अच्छे से अच्छे विचारों में शरीक नहीं हो पातीं। प्रोफेसर बसु और प्रोफेसर राय तथा उनके शानदार अनुसंधानों पर दृष्टिपात कीजिए। क्या यह लज्जा की बात नहीं है कि आम जनता को उनके अनुसंधानों के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

हिंदी दिवस पर विशेष

हम समाज की सबसे बड़ी सेवा यह कर सकते हैं कि अंग्रेजी भाषा की ज्ञान प्राप्ति को हम जो झूठा महत्व देना सीख गए हैं, उससे अपने को तथा समाज को मुक्त करें। हमारे स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। यह देश की राष्ट्रभाषा होती जा रही है। हमारे सर्वोत्तम विचार इसी भाषा में व्यक्त किए जाते हैं। अंग्रेजी शिक्षण की आवश्यकता में विश्वास के कारण हम दास बन गए हैं। इसने हमें सच्ची राष्ट्रसेवा के अयोग्य बना दिया है। यदि हम आदत से मजबूर न होते तो हम यह अनुभव कर सकते थे कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण हमारी प्रतिभा बिल्कुल अलग-थलग हो गई है, हम आम जनता से अलग हो गए हैं, देश की सर्वोत्तम मेधा बंदी बन गई है और जो नए विचार हमें मिले हैं उनसे आम जनता को कोई फायदा नहीं हुआ है। पिछले 60 वर्षों से ज्ञान संचय करने के बजाय हम नए-नए शब्दों तथा उनके उच्चारण रटने में लगे रहे हैं। हमने अपने माता-पिता से प्राप्त ज्ञान की नींव पर निर्माण करने के बजाय उसे लगभग भुला दिया है। इतिहास में इस तरह का और कोई उदाहरण नहीं मिलता। यह राष्ट्र का दुर्भाग्य है।

हम समाज की पहली तथा सबसे बड़ी सेवा यह कर सकते हैं कि हम अपनी देशी भाषाओं को पुनः अपनाएं, हिंदी को उसके राष्ट्रभाषा के स्वाभाविक पद पर फिर से प्रतिष्ठित करें और समस्त प्रांतीय कार्यों को अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं में तथा राष्ट्रीय कामों को हिंदी में करना शुरू करें। जब तक हमारे स्कूल तथा कॉलेज हमें देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं देने लगते तब तक हमें चैन से नहीं बैठना चाहिए। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'महात्मा गांधी का संदेश' से साभार

उपन्यास

पीटर पैन नेवरलैंड

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित उपन्यास प्रसिद्ध लेखक जेम्स मैथ्यू बेरी के मूल उपन्यास *पीटर पैन* का हिंदी रूपांतर है। इस उपन्यास का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसका रूपांतर *रमेश तैलंग* ने *पीटर पैन* के नाम से बड़ी सहज और सरल भाषा में किया है।

गतांक से आगे...

तभी लिजा नाना को गोद में लेकर वहां आ गई। नाना ने एकाएक जैसे कुछ सूंघ लिया था, उसे महसूस हुआ था कि बच्चों के कमरे में कुछ गड़बड़ है–इसलिए लिजा पता करने वहां आ गई थी। पर अंधेरा देखकर उसे लगा कि बच्चे आराम से सो रहे हैं। वह चुपचाप लौट गई। अभी तक श्री और श्रीमती डार्लिंग लौटकर नहीं आए थे।

पीटर ने पूछा–"तैयार?"

वैंडी, जान और माइकल बोले– "तैयार! पर पहले हमें उड़कर दिखाओ।"

इस पर पीटर पैन किसी परिंदे की तरह कमरे में उड़ने लगा। अंधेरे में वह आराम से उड़ रहा था।

"वाह, अद्‌भुत!" तीनों बच्चे बोले।

पीटर जानता था कि उड़ने के लिए परियों के पराग का जादू चाहिए। परियों ने पीटर के शरीर पर अपना पराग मल दिया था। इसलिए उसे उड़ने की शक्ति मिल गई थी। उसके बदन पर परी-पराग के कण अभी तक लगे हुए थे। पीटर ने बारी-बारी से परी-पराग के कण तीनों बच्चों के हाथों पर लगा दिए। उस जादू से उनमें भी उड़ने की शक्ति प्रवेश कर गई।

वैंडी ने खिड़कियां खोल दीं। आकाश की काली चादर पर सितारे चम-चम चमक रहे थे। तीनों बच्चे उड़ने की कल्पना में खोए हुए थे। इस बीच उन्होंने भी कमरे में पीटर की तरह उड़कर देख लिया था।

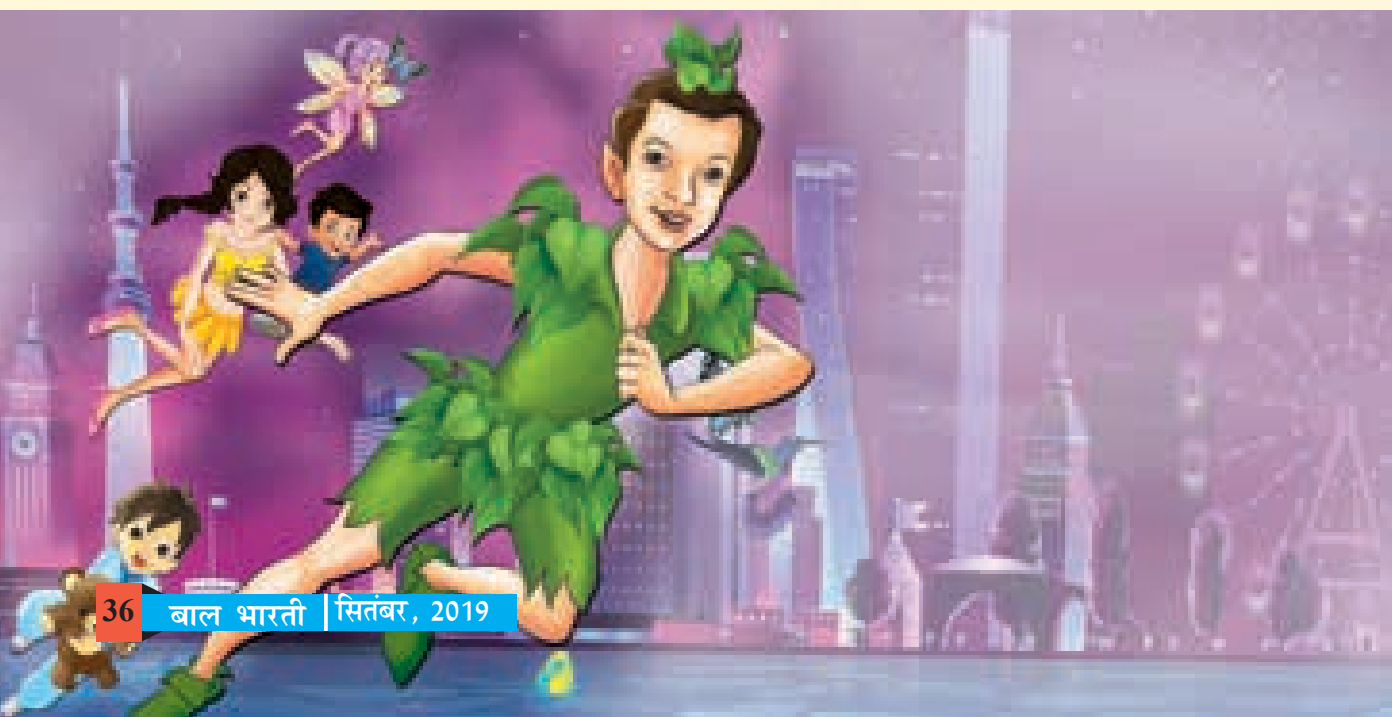

पीटर ने कहा–"मेरे पीछे-पीछे आ जाओ। वह और टिंकर बैल उड़ते हुए खिड़की से बाहर निकल गए। पीछे-पीछे वैंडी, जान और माइकल भी हाथ हिलाते हुए खिड़की से खुले में निकल आए। वे हवा में आराम से तैर रहे थे। गिरने का डर मन से पहले ही निकल गया था।

तभी श्री और श्रीमती डार्लिंग घर लौट आए। उन्होंने आकाश में कुछ उड़ती छायाएं देखीं। पर उन्हें कल्पना नहीं हुई कि वे वैंडी, जान और माइकल थे जो परिंदों की तरफ हवा में पीटर पैन के पीछे-पीछे उड़ते जा रहे थे। कहां, किधर, कोई नहीं जानता था।

वैंडी और उसके दोनों भाई जान और माइकल पीटर पैन के पीछे-पीछे आकाश में उड़े जा रहे थे। शुरू-शुरू में कुछ डर लगा था, पर अब मन एकदम शांत था, क्योंकि बच्चों को पता चल चुका था, परियों के जादू का प्रयोग करके पीटर पैन ने उन्हें भी बिना पंखों के उड़ना सिखा दिया था। आकाश में दूर-दूर तक चम-चम करते तारे बिखरे हुए थे। आकाश का इतना बड़ा विस्तार बच्चों ने इससे पहले कभी नहीं देखा था। उनके कमरे की खिड़की से तो आकाश का छोटो-सा चौकोर टुकड़ा ही नज़र आता था।

घर पीछे छूट गया था और वे उड़े जा रहे थे नेवरलैंड की तरफ जिसका पता पीटर ने वैंडी को बताया था–सेकंड से दाईं तरफ और वहां से सुबह तक सीधे। तो यह था नेवरलैंड पहुंचने का रास्ता। पहले वैंडी को डर लगा था कि वे तीनों पीटर की तरह कैसे उड़ पाएंगे। पर शहर की इमारतों और गिरिजाघरों की मीनारों के इर्द-गिर्द उड़ते हुए उन्हें रोमांच हो रहा था। वे अपने माता-पिता और घर के बारे में नहीं बस पीटर पैन और उसके रहस्यमय नेवरलैंड के बारे में सोच रहे हैं जिसका पता बहुत ही विचित्र था।

समय बीत रहा था। बच्चों को आकाश में उड़ते हुए काफी समय हो गया था। हालांकि वे हवा की पीठ पर सवारी कर रहे थे, पर फिर भी थकान तो होनी ही थी। अब वे ज़मीन को पार करके खुले समुद्र के ऊपर आ पहुंचे थे। जहां तक नज़र जाती थी, हर तरफ पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। कभी ठंडी हवा चलने लगती तो वे ठंड से सिहर उठते। भूख तो लगनी ही थी। उनकी भूख शांत करने का विचित्र तरीका सोचा था पीटर पैन ने। बच्चों के साथ आकाश में परिंदों के बहुत से झुंड भी उड़ रहे थे। पीटर पैन रह-रहकर परिंदों के पास जाता और उनकी चोंच में दबा भोजन लेकर इन तीनों को थमा देता। पता नहीं वह क्या चीज़ थी, पर जो भी कुछ था वह खाने में अच्छा था, और खाने से जान और माइकल की भूख शांत हो गई।

जान ने वैंडी से कहा–"दीदी, क्या पीटर पैन को भूख नहीं लगती। वह हमें तो खाना लाकर दे रहा है, पर स्वयं कुछ नहीं खा रहा है।"

वैंडी ने कहा–"पीटर पैन साधारण बालक नहीं है और मैं तो यह भी नहीं जानती कि वह बालक है भी या नहीं। दिखने में ज़रूर किसी बच्चे जैसा लगता है, पर पता नहीं उम्र कितनी है, शायद सैंकड़ों वर्ष!"

"तो क्या पीटर पैन सदा इसी तरह एक छोटे बच्चे जैसा दिखाई देगा?" जान ने अचरज भरे स्वर में पूछा।

"हां, शायद ऐसा ही है।" वैंडी बोली। तभी उसने देखा माइकल की आंखें नींद से बंद हुई जा रही हैं। उसने तुरंत पुकारा–"माइकल, सो मत जाना, वरना कुछ गड़बड़ हो जाएगी।" लेकिन माइकल ने शायद उसकी बात सुनी ही नहीं। वह गहरी नींद में सो गया था। नींद आते ही वह उड़ते-उड़ते गोल घूमने लगा फिर तेज़ी से नीचे गिरने लगा।

"अरे माइकल को बचाओ, नहीं तो वह समुद्र में गिर जाएगा।" वैंडी चिल्लाई तो पीटर पैन ने हवा में गोता लगाया और माइकल के ठीक नीचे पहुंचकर दोनों हाथ फैला दिए, फिर माइकल को हाथों में संभाले हुए उड़ने लगा। बड़ा विचित्र दृश्य था। लेकिन इस तरह माइकल को

संभाले हुए पीटर आखिर कब तक उड़ सकता था? कुछ देर इसी तरह उड़ते रहने के बाद माइकल की नींद खुल गई, फिर वह अपने-आप उड़ चला। अब उसे पीटर पैन के सहारे की ज़रूरत नहीं थी। पर बीच में माइकल के साथ कई बार यह दुर्घटना होते-होते बची। हर बार नीचे गिरते माइकल को पीटर पैन ने अपने हाथों पर संभाल लिया।

बीच-बीच में पीटर को खेल सूझता तो वह बहुत नीचे उतरकर समुद्र की सतह को छूता हुआ उड़ने लगता और लहरों पर तैरती मछलियों को स्पर्श करता चला जाता।

"वैंडी, मुझे घर की याद आ रही है।" एकाएक ने वैंडी से कहा।

"यह तो मुश्किल है। अब तो पीटर पैन ही हमें हमारे मम्मी-पापा के पास पहुंचा सकता है।" वैंडी बोली–"इसी तरह उड़ते रहो, और कोई चारा नहीं। हमें पीटर पैन का ही कहना मानना पड़ेगा।"

पीटर कभी-कभी इन तीनों को छोड़कर आगे चला जाता था। तब वैंडी और उसके भाई डर जाते थे, पता नहीं वह कहां चला जाता था। कुछ देर बाद लौटता तो वैंडी उससे पूछती पर पीटर मुस्कराकर रह जाता। उसका इस तरह बीच-बीच में यों चले जाना बहुत रहस्यमय था। कभी-कभी जब वह लौटकर आता तो वैंडी और जान माइकल की ओर ऐसे देखता जैसे उन्हें पहचानता न हो। पर कुछ देर बाद सब कुछ पहले जैसा सामान्य हो जाता। शायद पीटर को भी अपने भूलने के स्वभाव के बारे में पता था। उसने वैंडी से कहा–"जब तुम्हें ऐसा लगे कि मैं कुछ भूल रहा हूं तो बस इतना कह देना–"पीटर, मैं वैंडी हूं, मुझे सब याद आ जाएगा।"

इसके बाद ऐसा कई बार हुआ। जब वैंडी ने यह वाक्य दोहराया–"पीटर, मैं वैंडी हूं।" तो पीटर की आंखों में तुरंत पहचान उभर आई। यह बात अपने-आप में विचित्र थी, पर पीटर तो सामान्य मनुष्य था ही नहीं।

आखिर वे नेवरलैंड के निकट पहुंच गए। पीटर पैन ने वैंडी से नीचे देखने को कहा। वैंडी को एक द्वीप नज़र आया। एक और विचित्र बात दिखाई दी। हर कहीं सुनहरी तीर के निशान बने हुए

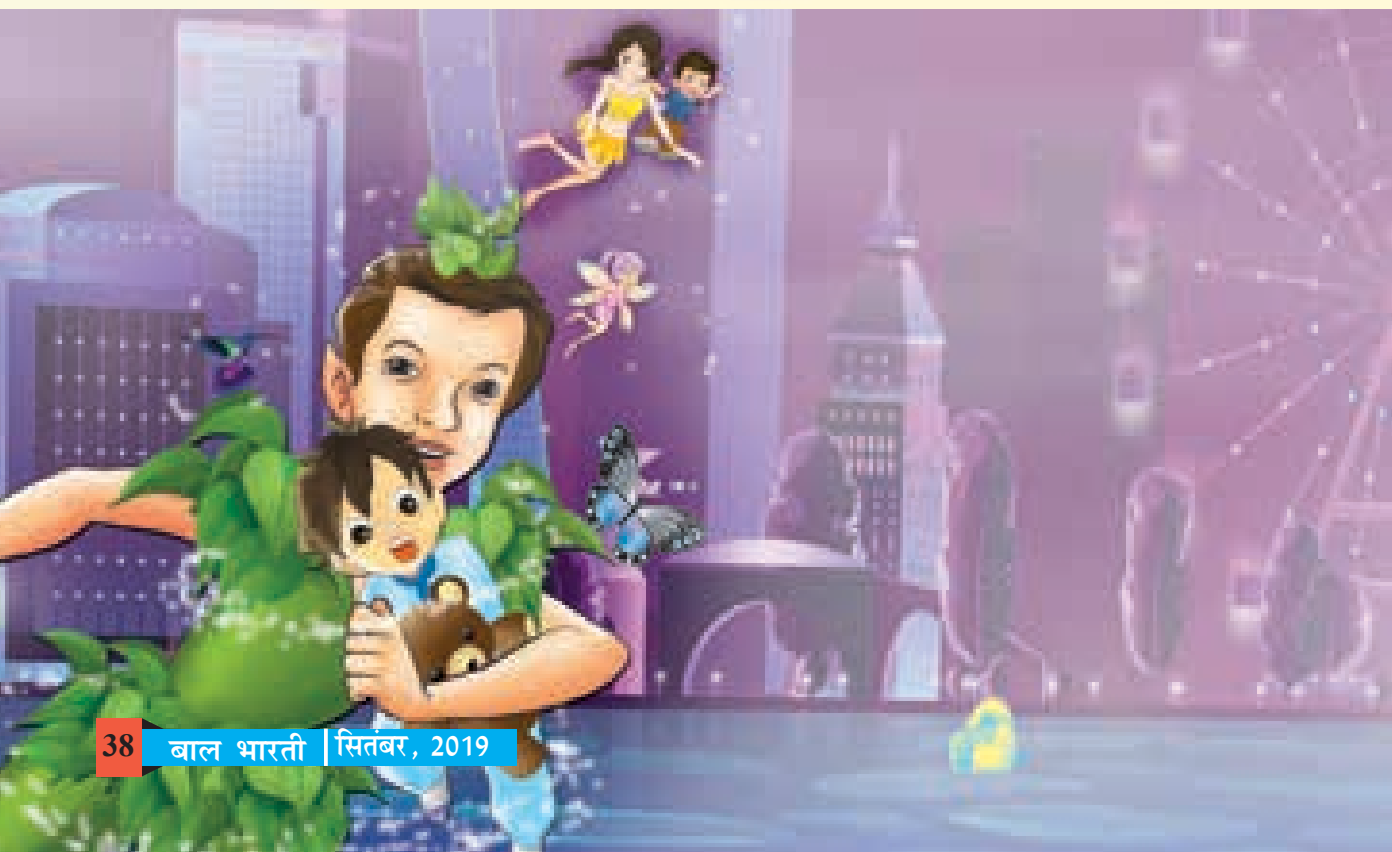

थे। हर सुनहरा तीर एक ही दिशा में संकेत कर रहा था। वैंडी के पूछने पर पीटर पैन ने कहा–"यहां आकर अक्सर लोग राह भटक जाते हैं। उनकी सहायता करते हैं ये सुनहरे तीर ताकि नेवरलैंड जाने वाले ठीक सही जगह पर पहुंच सकें।"

वैंडी, जान, माइकल–तीनों नेवरलैंड को देखने लगे। न जाने क्यों तीनों को ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने नेवरलैंड को पहले कभी-न-कभी ज़रूर देखा है। उनका ऐसा सोचना गलत था भी नहीं। पीटर पैन कई बार उनके सपनों में आया करता था–और उसी समय उन्हें नेवरलैंड का द्वीप भी दिखाई देता था, जहां पीटर पैन के साथी वे बच्चे रहते थे, जो मां-बाप से बिछुड़ गए थे।

तीनों ने आश्चर्य से पीटर पैन की तरफ देखा तो वह मुस्करा उठा जैसे पूछ रहा हो–"क्यों दोस्तो, बिलकुल वैसा ही है न मेरा नेवरलैंड जैसा तुमने अपने सपने में देखा था।" पर वैंडी और जान तथा माइकल उसकी मुस्कान में छिपा रहस्य नहीं समझ पाए।

अब वे तीनों पीटर पैन के साथ-साथ नेवरलैंड के द्वीप के ऊपर परिंदों की तरह मंडरा रहे थे। कभी-कभी वैंडी को ऐसा लगता था जैसे वह उड़ नहीं पा रही है। कोई उसे ज़बरदस्ती रोक रहा है, पता नहीं उसे ऐसा क्यों लग रहा था। उसने पीटर से पूछा तो उसने बस इतना कहा–"कोई नहीं चाहता कि हम नीचे उतर जाएं।"

"वह कौन है जो ऐसा चाहता है?" वैंडी ने जानना चाहा, पर तब तक पीटर पैन कुछ आगे चला गया था। कुछ देर बाद वह लौटा तो उसके हाव-भाव से लगा कि वह पुरानी बात को एकदम भूल चुका है। फिर जैसे कुछ याद आ गया तो उसने वैंडी से पूछा–"तुम जानना चाहती हो न हमारे नीचे उतरने में कौन बाधा डाल सकता है तो सुनो–वह है डाकुओं का दल। उनका सरदार है कैप्टन हुक।"

डाकू कैप्टन हुक का नाम सुनकर वैंडी कुछ घबरा गई। वह तो सोचती थी नेवरलैंड का द्वीप खोए हुए बच्चों का शरण-स्थल है जहां पीटर पैन उनकी देख-रेख करता है। पीटर पैन ने वैंडी को बताया भी था कि वह उन बच्चों के लिए कहानियों की तलाश में ही भटकता रहता है, और यह भी कहा था कि उसने श्रीमती डार्लिंग को कहानी कहते सुना था, इसलिए बार-बार आता रहता था। ❑

–क्रमशः

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(नवंबर, 2019)

बाल भारती का लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' पाठकों की मांग पर पुनः आरंभ किया गया है। इस कूपन के साथ 30 सितंबर, 2019 तक *'गुरु नानक'* पर आधारित एक आकर्षक चित्र बनाकर हमारे पास भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को *बाल भारती* में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को एक वर्ष तक हमारी ओर से *बाल भारती* की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी।

नाम .....

आयु .....

पता .....

.....

.....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

गुरु नानक देव

–महीप सिंह

गुरु नानक देव जी का जन्म 15 अप्रैल 1469 (वैशाख सुदी 3 संवत 1526) को एक खत्री परिवार में लाहौर से 65 किलोमीटर दूर राय भोये की तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था। इस स्थान को अब ननकाना साहब नाम से पुकारा जाता है। आज यह पाकिस्तान के शेखूपुरा जिले में है। यद्यपि गुरु नानक का जन्म बैसाख मास में हुआ था किंतु कार्तिक पूर्णिमा के दिन उसे मनाए जाने की परंपरा विकसित हो गई है।

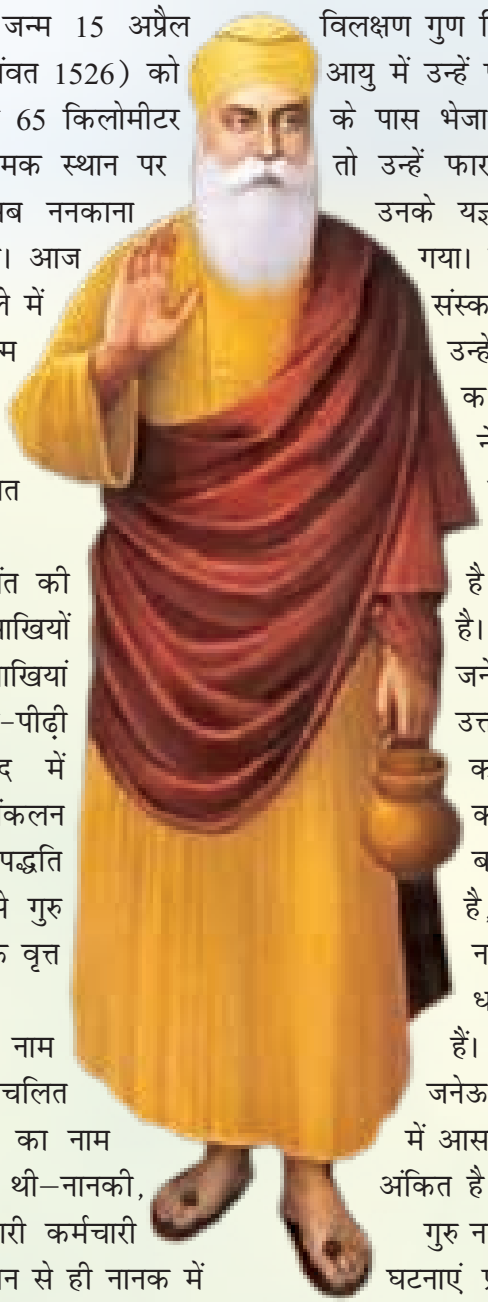

गुरु नानक के जीवन वृत्तांत की स्रोत-सामग्री अनेक जन्म साखियों से प्राप्त होती है। ये जन्म साखियां मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनी-सुनाई जाती रहीं। बाद में श्रद्धालु सिखों द्वारा उनका संकलन किया गया। इनकी रचना पद्धति पौराणिक है, किंतु इन्हीं में से गुरु नानक के जीवन का ऐतिहासिक वृत्त प्राप्त किया जा सकता है।

गुरु नानक के पिता का नाम मेहता कल्याण चंद्र बेदी (प्रचलित नाम कालू मेहता) और माता का नाम तृप्ता था। उनकी एक बड़ी बहन थी–नानकी, जो सुल्तानपुर लोधी के सरकारी कर्मचारी जयराम से ब्याही हुई थी। बचपन से ही नानक में विलक्षण गुण दिखाई देने लगे थे। सात वर्ष की आयु में उन्हें पढ़ने के लिए पांधा (उपाध्याय) के पास भेजा गया। जब वे नौ वर्ष के हुए तो उन्हें फारसी पढ़ने के लिए भेजा गया। उनके यज्ञोपवीत संस्कार का समय आ गया। कुल पुरोहित पंडित हरदयाल ने संस्कार विधि पूरी करने के लिए जब उन्हें जनेऊ पहनाना चाहा तो प्रचलित कथा के अनुसार, बालक नानक ने पंडित जी से कहा, "पंडित जी, जो जनेऊ आप मुझे पहनाना चाहते हैं वह तो मैला हो जाता है, टूट जाता है, नष्ट हो जाता है।" पंडित जी ने पूछा, "तुम कैसा जनेऊ पहनना चाहते हो।" उनका उत्तर था, "ऐसा जनेऊ जो दया की कपास से, संतोष के सूत से, यति की गांठ और सत्य की पूरन से बना हुआ हो। ऐसा जनेऊ न टूटता है, न मैला होता है, न जलता है, न नष्ट होता है। जो ऐसा जनेऊ धारण करते हैं, वे धन्य हो जाते हैं। पंडित जी यदि आपके पास ऐसा जनेऊ है तो ले आइए।" नानक वाणी में आसा राग में इस भाव का एक सबद अंकित है।

गुरु नानक के जीवन से संबंधित अनेक घटनाएं प्रचलित हैं। सांसारिक कार्यों में

उनकी विरक्ति देखकर 16 वर्ष की आयु में उनका विवाह कर दिया गया। उनके दो पुत्र भी हुए। उनके नाम थे श्रीचंद और लखमी चंद। उनके पिता इस कारण सदा खिन्न रहते थे कि उनका पुत्र सांसारिक कार्यों में उतनी रुचि नहीं लेता, जितनी वह चाहते थे। इस कारण उनके बहनोई जयराम ने उन्हें अपने पास सुल्तानपुर लोधी बुलवा लिया और उन्हें नवाब दौलत खान के पास मोदी खाने में नौकरी दिला दी। सुल्तानपुर लोधी का यह प्रवास उनके जीवन की दिशा का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। यहां उन्हें वह आत्मानुभूति प्राप्त हुई जिसने उन्हें नानक से गुरु नानक बना दिया।

एक दिन वे पास की वेईं नदी में स्नान करने गए। वे नदी में से तीन दिन तक वापस नहीं आए। स्नान के पश्चात वे पास के जंगल में चले गए और साधनारत हो गए। यहीं उन्हें ज्ञान-ज्योति प्राप्त हुई। जब वे वापस आए तो पूरी तरह बदले हुए थे। उनके मुंह से निकल रहा था "ना कोई हिंदू ना मुसलमान, मैं हिंदू और मुसलमान के बीच कोई भेद या द्वैत स्वीकार नहीं करता, मैं केवल मनुष्य को पहचानता हूं।" इसके पश्चात गुरु नानक ने घर-बार सब कुछ त्याग दिया। सुल्तानपुर लोधी में ही उनका बाल मित्र मरदाना उनसे आ मिला। भाई मरदाना मिरासी जाति का मुसलमान था। वह रबाब बहुत अच्छी बजाता था। गुरु नानक और मरदाना मिरासी लंबी यात्राओं पर निकल पड़े जिन्हें गुरु नानक की उदासियां कहां जाता है। यह शब्द ग्रीक भाषा के शब्द *ओडसी* से लिया गया है। जिसका अर्थ है लंबी यात्रा। यूनानी लोग सिकंदर के समय भारत आए थे और लंबे समय तक पंजाब क्षेत्र में शासन करते रहे थे। उनके कुछ शब्दों ने स्थानीय रूप ग्रहण कर लिया था। ओडसी से उदासी बना शब्द गुरु की यात्राओं के साथ अभिन्न रूप से जुड़ गया। अपनी पहली उदासी में वे तलवंडी से चलकर सैदपुर (ऐमनाबाद) आए। वहां उन्होंने एक गरीब बढ़ई भाई लालो का आतिथ्य स्वीकार किया और एक अमीर जागीरदार मलिक भागो के ब्रह्मभोज में सम्मिलित होना अस्वीकार कर दिया क्योंकि गरीब लालो की सूखी रोटी में मेहनत के दूध का स्वाद था और मलिक भागो के पकवानों में लोगों के शोषण का रक्त था। प्रतीक रूप में उनके जीवन की यह कथा प्रसिद्ध है, उन्होंने अपने एक हाथ में भाई लालो की सूखी रोटी ली और दूसरे हाथ में मलिक भागो का पकवान लिया। जब उन्होंने दोनों को निचोड़ा तो भाई लालो की रोटी से दूध निकला और मलिक भागो के पकवान में से लहू टपका।

जात-पांत, ऊंच-नीच की सामाजिक बुराई के विरुद्ध गुरु नानक ने जीवन भर अभियान चलाया। अपनी पहली यात्रा में ही उन्होंने स्वयं अपना आदर्श रखकर इसकी व्यवहारिक परिणति लोगों के सम्मुख रख दी थी।

उनकी पहली उदासी पश्चिमी पंजाब की थी। स्लायकोट में उन्होंने सूफी फकीर शाह हमजा से भेंट की। वहां से वे अचल बटाला आए। शिवरात्रि का अवसर था। वहां बहुत से योगी आए हुए थे। गुरु नानक ने उनसे संवाद किया। फिर तलवंडी में अपने माता-पिता और परिवार के साथ कुछ समय व्यतीत कर वे 13 वीं शती के सुप्रसिद्ध सूफी संत शेख फरीद की गद्दी पाक पत्तन पर जाकर उनके उत्तराधिकारी शेख इब्राहीम से मिले। शेख फरीद के चार पद और 118 श्लोक गुरु ग्रंथ साहब में संगृहित हैं। इन रचनाओं को इसी अवसर पर गुरु नानक ने शेख फरीद के उत्तराधिकारियों से प्राप्त किया होगा।

मुलतान की यात्रा पर जाते समय वे एक रात्रि के लिए तुलम्बा नामक स्थान पर ठहरे। यहां एक बहुरूपिया ठग संतों के वेश में रहता था।

लोग उसे शेख सज्जन कहते थे। वह हिंदू तथा मुसलमान यात्रियों को अपनी वेशभूषा और बातचीत से प्रभावित कर लेता था। उन्हें रात्रि में अपनी बनाई धर्मशाला में ठहराता था, फिर उनकी हत्या कर उनका सामान लूट लेता था। गुरु नानक को उस सज्जन ठग की वास्तविकता का पता लग गया। उन्होंने उसके सम्मुख एक 'सबद' (भजन) का गायन किया, जिसका भावार्थ था कि कांसे के बड़े चमकदार बर्तन की स्याही को अनेक बार घिसने से भी उसकी स्याही नहीं उतरती। अनेक सुंदर महल भी अंदर से खोखले होते हैं। जब वे गिर जाते हैं तो किसी के काम नहीं आते। बगुले के पंख बहुत सफेद होते हैं पर वह जल-जंतुओं को खा जाता है। उसे सफेद (पापहीन) कौन कहेगा? सेमल के वृक्ष पर लगे फीके फलों को देखकर तोता उन्हें मीठा फल समझ कर खाने का प्रयास करता है, किंतु उसे कुछ नहीं मिलता। एक अंधा व्यक्ति रास्ते पर किस प्रकार चलेगा? परमेश्वर का नाम ही व्यक्ति को सांसारिक बंधनों से मुक्ति दिलाता है।

गुरु नानक का गायन सुनकर शेख सज्जन बहुत प्रभावित हुआ। उसने पाप का मार्ग त्याग दिया और सचमुच सज्जन बन गया।

मुलतान पीरों-फकीरों का एक बड़ा केंद्र था। गुरु नानक और भाई मरदाना एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। पीरों को उनके आगमन का पता लगा। उन्होंने दूध से पूरा भरा हुआ एक कटोरा उनके पास भेजा। इसका प्रतीकात्मक अर्थ था कि यह नगर पीरों-फकीरों से उसी प्रकार पूरी तरह भर हुआ है जैसे यह कटोरा दूध से भरा हुआ है। गुरु नानक ने उस कटोरे में दूध पर चमेली का एक फूल रखकर वापस कर दिया, जिसका अर्थ यह था कि मैं इस नगर में इसी प्रकार रहूंगा जैसे चमेली का फूल इस कटोरे के दूध पर रखा हुआ है।

गुरु नानक की पहली यात्रा लगभग एक वर्ष की थी। दूसरी यात्रा लगभग बारह वर्ष की थी। यह यात्रा पूर्वी भारत की थी। इस यात्रा में वे असम तक गए। मार्ग में उन्होंने हरिद्वार, गोरखमता, प्रयाग, काशी, पटना, गया आदि हिंदू तीर्थों की यात्रा की। काशी में उन्होंने संत रविदास से भेंट की और मगहर जाकर वह संत कबीर से मिले। बंगाल में बारहवीं शती के प्रख्यात संत और गीत गोविंद के रचयिता जयदेव के निवास स्थान पर भी गए। गुरु ग्रंथ साहब में रविदास, कबीर और जयदेव के जिन पदों को संगृहित किया गया है, गुरु नानक ने अपनी इस यात्रा में ही इन पदों का संग्रह किया था।

असम (कामरूप) के संबंध में यह लोक मान्यता थी कि वहां स्त्रियों का राज्य है और वे जादू-टोने में बहुत प्रवीण हैं। गुरु नानक की जन्म साखियों में ऐसी कथाओं का उल्लेख है कि किस प्रकार वहां की रानी नूर शाह ने भाई मरदाना पर अपना प्रभाव दिखाया था, किंतु गुरु नानक का उपदेश सुनकर वह उनकी श्रद्धालु बन गई थी। अपनी इसी यात्रा में गुरु नानक देव और मरदाना जगन्नाथपुरी गए। इसी स्थान पर उन्होंने प्रभु की उस आरती का गायन किया, जिसमें संपूर्ण सृष्टि की सहभागिता हो जाती है।

फिर पूर्वी समुद्र तट के किनारे-किनारे होते हुए वह रामेश्वरम पहुंच गए। वहां से वे सिंहल द्वीप (श्रीलंका) पहुंचे। इस यात्रा का उनका मुख्य उद्देश्य बौद्ध तथा जैन तीर्थों की यात्रा करना था। उत्तर की ओर लौटते समय वे तेरहवीं शती के प्रसिद्ध संत नामदेव के जन्म स्थान, महाराष्ट्र में, पंढरपुर गए। राजस्थान में उनकी भेंट भक्त धन्ना से हुई जो उस समय 93 वर्ष के थे। गुरु नानक ने भक्त नामदेव और भक्त धन्ना की कुछ वाणी इसी यात्रा में एकत्र की, जिसे बाद में गुरु ग्रंथ साहब में सम्मिलित किया गया। गुरु नानक की यह सबसे लंबी यात्रा थी।

उनकी तीसरी उदासी दो वर्ष की थी। इस यात्रा में गुरु नानक और भाई मरदाना ने उत्तर के पर्वतीय प्रदेशों की यात्रा की। इस यात्रा में वे योगियों, सिद्धों और बौद्ध साधुओं के संपर्क में आए। इस यात्रा में वे ज्वालामुखी, कांगड़ा, रवालसर, कुल्लू, लाहौल स्फीती और तिब्बत तक गए। यह यात्रा उन्हें हिमालय की ऊंची चोटियों में सुमेरू पर्वत पर भी ले गई। वहां अनेक सिद्ध तपस्या करने में लीन थे। गुरु नानक और भाई मरदाना को देखकर वे आश्चर्य में पड़ गए। संसार की स्थिति क्या है, हिंदुस्तान पर किसका शासन है, जनता का क्या हाल है, इस संबंध में उन्हें कुछ ज्ञात नहीं था। उन्होंने पूछा "संसार का क्या हाल है?" गुरु नानक ने उत्तर दिया–"इस युग में शासक कसाई हो गए हैं, धर्म पंख लगाकर उड़ गया है, झूठ की अमावस छाई हुई है, सच का चंद्रमा कहीं दिखाई नहीं देता। मैं उसे ढूंढ रहा हूं। अभी तो सभी ओर अंधेरा दिखाई देता है, उसमें कोई राह नहीं सुझाई देती।

सिद्धों, नाथपंथियों, संन्यासियों से उनका निरंतर संवाद होता रहता था। उन्हीं संवादों को आधार बनाकर उनकी महत्वपूर्ण रचना है सिध गोसटि (सिद्ध गोष्ठी)।

पश्चिमी एशिया की यात्रा को गुरु नानक की यात्राओं में बहुत महत्व दिया जाता है। अपनी पूर्व यात्राओं में वे भारत के सभी भागों में जाकर विभिन्न धर्मों, पंथों, संप्रदायों के पंडितों, संतों, फकीरों से मिल चुके थे। उन्होंने उनसे आध्यात्मिक चर्चा भी की थी और तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक

और राजनीतिक विषम स्थितियों पर भी बातचीत की थी। पश्चिमी एशिया की यात्रा इस्लामी देशों की यात्रा थी। उन्होंने और भाई मरदाना ने यह यात्रा समुद्री मार्ग से की। इस समय उन्होंने अपनी वेशभूषा हाजियों जैसी बना ली। उन्होंने नीले वस्त्र पहने हुए थे। उनके हाथ में छड़ी थी, बगल में किताब थी, लोटा था और नमाज के समय बिछाया जाने वाला वस्त्र था:

बाबा फिर मक्के गिआ नील वसत्र धारे बनवारी।
आसा हत्थ किताब कच्छ कूजा बाग मुसल्ला धारी।।

बगदाद के एक कब्रिस्तान के निकट एक प्राचीन शिलालेख प्राप्त हुआ है। उसमें तुर्की-अरबी मिश्रित भाषा गुरु नानक के आगमन का संकेत है।

बगदाद से गुरु नानक ईरान, खुरासान, काबुल, कंधार, जलालाबाद होते हुए पेशावर आए। उन्होंने अटक के निकट सिंधु नदी पार की और हसन अब्दाल आ गए। यहां एक पत्थर पर उनके पंजे के निशान हैं। यही स्थान पंजा साहब के नाम से प्रसिद्ध हुआ और एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान बन गया। यहां अब एक बड़ा गुरुद्वारा है।

गुरु नानक ने अपने जीवन के लगभग 22 वर्ष यात्राओं में व्यतीत किए थे। उन्होंने बाबर के आक्रमण और उसकी सेना द्वारा निरीह जनता पर हुए अत्याचारों को अपनी आंखों से देखा था। बाबर के कारिंदों ने उन्हें कुछ समय के लिए बंदी भी बना लिया था। अपने प्रिय शिष्य भाई लालो को संबोधित करते हुए बाबर के आक्रमण का बड़ा मार्मिक चित्र उन्होंने अपनी वाणी में प्रस्तुत किया है।

जीवन के अंतिम 17 वर्ष गुरु नानक ने एक कर्मशील गृहस्थ की भांति व्यतीत किए। कुछ समय वे रावी नदी के बाएं किनारे पर 'पखोके रंधावे' नामक स्थान पर रहे। इस गांव के चौधरी भाई अजिता ने उनसे निवेदन किया कि वे वहीं अपना स्थायी निवास बना लें। यह स्थान अब भारत के गुरदासपुर जिले में है।

भाई अजिता ने उन्हें रावी के उस पार की बहुत-सी ज़मीन दे दी। गुरु नानक ने इस स्थान पर एक नई बस्ती बसाई और उसे करतारपुर नाम दिया। आज यह नगर पाकिस्तान में है। उनके माता-पिता और परिवार भी यहीं आ गया था। उस समय तक उनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई थी। हजारों लोग उनके शिष्य बन चुके थे। दूर-दूर से असंख्य लोग उनके दर्शन करने और उनका उपदेश सुनने के लिए वहां आने लगे।

करतारपुर में स्थाई आवास बना कर गुरु नानक गृहस्थ जीवन जीने लगे। अपने परिवारजनों के साथ वे स्वयं खेती करते थे। उनके जीवन का आदर्श था:

घाय खाय किछु हत्थहुं देई।
नानक राह पछानसि सेई।।

(जो व्यक्ति श्रमपूर्वक कार्य करके उपार्जन करता है और उसी में से भलाई के कार्य के लिए कुछ देता है, वही सही राह को पहचानता है)

करतारपुर में ही भाई लहणा गुरु नानक की शरण में आए और पूरी तरह उन्हे समर्पित हो गए। गुरु नानक ने भाई लहणा में वे सभी गुण देखे जो अपने भावी उत्तराधिकारी में देखना चाहते थे। गुरु नानक ने अपने जीवन काल में भाई लहणा को अंगद नाम देकर अपना उत्तराधिकारी बना दिया। गुरु अंगद सिख धर्म के दूसरे गुरु हुए।

आश्विन बदी 10 संवत 1596 (7 सितंबर 1539) को गुरु नानक को ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई। ❑

–प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'गुरु नानक से गुरु ग्रंथ साहब तक' से साभार

एकांकी

जन सुनवाई

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

–शंकर लाल माहेश्वरी

रात्रि के आठ बजे हैं। सभी जीव-जंतु गांव के बाहर बगीचे में एकत्रित हैं जिनमें उड़ने वाले, रेंगने वाले और फुदकने वाले जीव सम्मिलित हैं। क्षेत्रीय विधायक जिलाधीश महोदय तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी सभा स्थल पर उपस्थित हैं।

जिलाधीश–मैं प्रशासन की ओर से आप सभी जीव-जंतुओं का हृदय से स्वागत करते हुए विश्वास दिलाता हूं कि आपकी जो भी समस्याएं हैं, उनका यथा संभव समाधान किया जाएगा। इसके लिए हमारे विधायक महोदय का पूरा सहयोग मिलेगा।

विधायक–इस अवसर पर मैं अधिकारी महानुभावों से आशा करता हूं कि मेरे इन मूक प्राणियों की जो भी समस्याएं हैं उनका अपने स्तर पर शीघ्र समाधान कर इन्हें राहत दिलाएंगे। मैं भी अपनी ओर से हर संभव सहयोग करने का विश्वास दिलाता हूं। कृपया अपनी समस्याएं बताएं।

अजगर–मान्यवर! हम सभी प्राणियों के लिए पेड़ ही जीवन के आधार हैं। हमारा भोजन, आवास, उपचार, छाया तथा समस्त प्रकार की सुविधाएं इन पेड़ों से ही मिलती है। जिनकी आज अंधाधुंध कटाई हो रही है। हमारे आशियाने नष्ट होते जा रहे हैं। हमारी जीना मुश्किल हो गया है। हमें दूषित पर्यावरण में जीना पड़ रहा है। गंदगी का साम्राज्य बड़ गया हैं। इस

समस्या का समाधान आवश्यक है।

वन अधिकारी–यह सही है कि सड़कों की चौड़ाई करण, नई सड़कों के निर्माण, कल कारखानों की बढ़ोतरी, नई कॉलोनियों की बसावट के कारण पेड़ अधिक मात्रा में कट रहे हैं।

मोर– इस समस्या का समाधान क्या है?

पर्यावरण अधिकारी–वर्तमान में हरे पेड़ों की कटाई पर रोक है। अधिक पेड़ लगाने का प्रचार सार्वजनिक संस्थानों के द्वारा 'वृक्ष लगाओ अभियान' चलाने की व्यवस्था तथा नागरिकों के जन्म दिवस, शादी आदि विशेष उत्सवों पर वृक्षारोपण के लिए लोगों को प्रेरित किया जा रहा है। शीघ्र ही इस समस्या पर नियंत्रण अवश्य होगा।

मछली– विधायक जी! प्राणी मात्र के लिए पानी अनिवार्य आवश्यकता है। आज नदियों का पानी दूषित हो गया है। जलाशय सूख गए है, गंदे और विषैले पानी के कारण जीव-जंतु मर रहे है। प्रदूषित पानी के कारण धीरे-धीरे हमारी समस्त प्रजातियां नष्ट होती जा रही हैं।

पर्यावरण अधिकारी– कल कारखानों के दूषित एवं केमिकल युक्त पानी के रिसाव, धार्मिक स्थानों पर लोगों द्वारा चढ़ाई गई फूल मालाएं, प्रसाद तथा प्लास्टिक थैलियों को नदियों में बहाने के कारण पानी मटमैला और दूषित होता है। शहरों की गंदी नालियों का पानी भी उसी में जाकर मिलता है। इसके समाधान के लिए जन जागृति के साथ पर्यावरण संरक्षण हेतु सरकार द्वारा विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं।

कोयल–महाशय जी! जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ रही है। वैसे-वैसे औद्योगीकरण का निरंतर विस्तार हो रहा हैं। आवागमन के साधन बढ़ रहे है। इनसे निकलने वाले गैस व धुंए से पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। खुले में शौच, खुले में कचरा डालना, वाहनों की ध्वनियां आदि से भी सारा वातावरण विषैला बन गया है। इस पर भी नियंत्रण आवश्यक है। वायु प्रदूषण से भी कई बिमारियां फैल रही हैं। तभी चिड़िया ने कहा ''कछुआ भैया आप भी तो कुछ कहिए।''

कछुआ–यदि विधायक महोदय इसे अन्यथा नहीं ले तो मेरे तो सुझाव इस प्रकार हैं।

- समस्त जंतुओं के लिए अलग से चिकित्सालयों की सुविधा दी जाए। मांसाहारी और हिंसक लोगों द्वारा की जाने वाली जीव हत्या पर रोक लगाई जाए।
- हमारे लिए छोटे जलाशय पानी की पौध की शहर से अलग व्यवस्था की जाए।
- बाग-बगीचों के निर्माण का बढ़ावा दिया जाए।
- हमारी सुरक्षा के लिए अलग से आयोग की स्थापना की जाए।
- मानवीय अत्याचारों की सुनवाई के लिए विशेष न्यायालय बनाया जाए।
- साफ-सफाई का ध्यान रखा जाए।

विधायक– महोदय! समस्त जीव-जंतुओं से मेरा विनम्र आग्रह की आप द्वारा प्रस्तुत समस्त समस्याओं के समाधान हेतु प्रशासन द्वारा पूरा सहयोग रहेगा। मेरी और से भी इस कार्य के लिए बजट की कमी नहीं रहेगी। जन जागृति, सार्वजनिक संस्थाओं के सहयोग, शिक्षा संस्थाओं की भागीदारी, तथा सरकारी योजनाओं के समुचित क्रियान्वयन से समस्याओं का समाधान होगा। मैं पूरा विश्वास दिलाता हूं।

अजगर– मैं समस्त जीव जंतुओं की ओर से अधिकारी महोदय, जिलाधीश महोदय तथा विधायक महोदय का हृदय से आभार स्वीकार करते हुए आशा करता हूं कि हमारे द्वारा प्रस्तुत समस्याओं का समाधान शीघ्र होगा। ❑

–पोस्ट-आगूंचा,
जिला-भीलवाड़ा,
राजस्थान-311022

तीन-तीन राजा

–पवन कुमार वर्मा

भारती वन के ठीक बीचो-बीच एक नदी बहती थी। वन के सभी जानवर और पक्षी वहीं पानी पीने आते थे। उस नदी में रहने वाले जीव-जन्तु अब अपना नया राजा बनाना चाहते थे। धीरे-धीरे यह बात सुन्दर-वन में चारों ओर फैल गई।

राजा सिंहराज तक भी यह बात पहुंची। उन्हें बहुत दुःख हुआ। उन्होंने कभी किसी के साथ कोई भेद-भाव नहीं किया। चाहे वह नदी में रहने वाले जन्तु हों, या फिर उड़ने वाले पक्षी हों। उन्होंने तुरंत कालू सियार को नदी में रहने वाले जीव-जन्तुओं के पास भेजा।

जैसे ही कालू सियार नदी के किनारे पहुंचा, नदी में रहने वाले सारे जीव-जन्तु वहां इकठ्ठे हो गए।

''आखिर तुम लोग अपना अलग राजा क्यों बनाना चाहते हो?'' कालू सियार ने महंगू मगरमच्छ से पूछा।

''इस नदी में सभी लोग पानी पीने आते हैं। हम उन्हें कुछ नहीं कहते। वे इस नदी में नहाते भी हैं, जिससे पूरी नदी गंदी हो जाती है। यही नहीं वे अपने घर का कचरा भी नदी में डाल देते हैं। वे कभी नहीं सोचते कि इस नदी में हमारा घर भी है। हम यहीं रहते हैं। अब हम यहां किसी को नहीं आने देंगे। हम इसकी देख-रेख खुद करेंगे।'' महंगू मगरमच्छ ने एक सांस में ही अपना दुःख सुना दिया। कालू सियार के पास उसकी बातों का कोई जबाब नहीं था। महंगू ठीक कह रहा था।

''आज से महंगू मगरमच्छ ही हमारा राजा है। हम केवल उसकी बात मानेंगे।'' छुटकी मछली ने साफ-साफ कह दिया।

कालू सियार वहां से लौट गया। दूर बैठी नन्हीं गौरैया यह सब देख रही थी। उसने सोचा तब तो हमें भी अपना नया राजा बनाना चाहिए। उसने उड़ने वाले पक्षियों को इस बारे में समझाया, ''साथियों। सुन्दर-वन के जानवर पेड़ों के फल, फूल, पत्तियां सब कुछ खाते हैं। साथ में नुकसान भी खूब करते हैं। इन पेड़ों पर हमारा घर है। कभी-कभी तो वे हमारे घर भी तोड़ डालते हैं। गप्पू हाथी को तो जब गुस्सा आता है तो

वह पूरा का पूरा पेड़ ही गिरा देता है। हमें मिलकर उनसे लड़ना चाहिए।'' सब उसकी बातों से सहमत थे। फिर उन सबने कल्लू कौवे को अपना राजा चुन लिया।

अब इस छोटे से वन में तीन-तीन राजा थे। नदी में रहने वाले जीव-जंतुओं के राजा, जमीन पर रहने वाले जानवरों के राजा और उड़ने वाले पक्षियों के राजा।

धीरे-धीरे सबने अपनी-अपनी सीमाएं बना ली। कल तक मिलजुल कर रहने वाले जानवर अब तीन भागों में बंट गए।

महंगू मगरमच्छ की सबसे गहरी दोस्त थी- चिक्की हिरन। वह जब भी नदी पर पानी पीने आती तो वह महंगू से घन्टों बातें करती। कभी-कभी महंगू उसे अपनी पीठ पर बैठाकर नदी में दूर तक घुमा भी लाता था।

आज सुबह जब महंगू मगरमच्छ नदी की सैर पर निकला, तब उसने देखा चिक्की हिरन नदी किनारे बैठी रो रही है।

''क्या बात है चिक्की? तुम क्यों रो रही हो?'' उसने चिक्की से पूछा। ''क्या बताऊं भईया? तुम तो जानते हो मेरी मां मेरे भाई के पास नदी के उस पार रहती है।'' चिक्की हिरन बोली।

''हां-हां। मैं जानता हूं। मैं कई बार तुम्हें अपनी पीठ पर बैठा कर नदी के उस पार ले गया हूं।'' महंगू बोला।

''हां भईया। कल छुटकी मछली से मेरे छोटे भाई ने खबर भिजवाई थी कि मां बहुत बीमार है। वह मुझसे मिलना चाहती है। लेकिन तुमने तो जमीन पर रहने वाले जानवरों को नदी पर आने से मना कर रखा है। अब मैं अपनी मां से मिलने कैसे जाऊं?'' इतना कहकर चिक्की हिरन जोर-जोर से रोने लगी।

उसकी बात सुनकर महंगू मगरमच्छ गहरी सोच में पड़ गया। चिक्की की मां जब कभी भी नदी किनारे आती थी तो उसके लिए जंगल से मीठे फल लाना नहीं भूलती थी। वह चिक्की को उसकी मां के पास ले जाना चाहता था।

लेकिन उसने जमीन पर रहने वाले जानवरों को नदी से दूर रहने को कहा था। अगर वह चिक्की को नदी के उस पार ले गया तो उसके साथी उससे नाराज हो जाएंगे।

''महंगू भईया। मुझे किसी तरह नदी पार करा दो। मुझे अपनी मां से मिलना है।'' चिक्की हिरन लगातार रो रही थी।

दूर नीम के पेड़ पर बैठा कल्लू कौवा उन दोनों की बातों को बहुत ध्यान से सुन रहा था। उसे भी चिक्की पर दया आ रही थी।

महंगू बहुत देर तक सोचता रहा फिर उसने चिक्की से कहा, ''ठीक है। अंधेरा होते ही तुम चुपके से यहां आ जाना मैं तुम्हें नदी पार करा दूंगा।'' उसकी बात सुनकर चिक्की

खुशी से उछल पड़ी। महंगू मगरमच्छ की बात सुनकर कल्लू कौवा भी बहुत खुश हुआ।

अंधेरा होते ही चिक्की हिरन अपने सामान के साथ नदी किनारे पहुंच गई। महंगू पहले से ही वहां मौजूद था। चिक्की उसकी पीठ पर बैठ गई। लेकिन उसका सामान कैसे जाएगा? महंगू की पीठ पर तो सामान भीग जाएगा। वे दोनों इस बारे में सोच ही रहे थे कि अचानक कल्लू कौवा वहां आ गया। उसे देखते ही महंगू एक दम से घबरा गया।

''महंगू भईया। चिक्की परेशान है। हमें उसकी मदद करनी चाहिए। घबराओ मत। मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम चिक्की को अपनी पीठ पर बैठा लो। मैं उसका सामान अपनी चोंच से उठा लूंगा। मैं उड़ कर तुम्हारे साथ नदी के उस पार चलूंगा।'' कल्लू कौवा बोला।

''कल्लू भईया। मैं तुम्हारा यह अहसान कभी नहीं भूलूंगी।'' चिक्की फिर से रोने लगी।

''रो मत चिक्की। हम तुम्हें नदी के उस ओर जरूर ले जाएंगे।'' कौवा उसके सामान की पोटली को अपनी चोंच से उठाते हुए बोला। वे तीनों चल पड़े।

''महंगू भईया। आपने जमीन पर रहने वाले जानवरों को नदी पर आने से क्यों मना किया है?'' नदी पार करते समय चिक्की ने महंगू मगरमच्छ से पूछा।

''तुम्हें तो पता है चिक्की। हम लोग नदी में रहते हैं। नदी में और भी जीव-जंतु रहते हैं। उनके घर हैं। छोटे-छोटे बच्चे हैं। नदी का पानी गंदा होगा तो हमारे बच्चे बीमार होंगे। गंदे पानी को पीने वाले लोग भी बीमार होंगे।'' महंगू बोला।

''आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं महंगू भईया। किसी को भी नदी का पानी गन्दा नहीं करना चाहिए।'' चिक्की को महंगू मगरमच्छ की बात बिलकुल ठीक लगी।

''अगर हम नदी को गन्दा नहीं करें, तब तो आप हमें वहां आने देंगे?'' चिक्की ने महंगू से पूछा।

''जरूर। नदी केवल मेरी नहीं है। यह हम सब की है। हमें मिलकर इसे साफ रखना चाहिए। महंगू ने उसे समझाया।

वे सब नदी के उस पार पहुंच गए। कल्लू कौवा बुरी तरह थक गया था। थोड़ा आराम करने के बाद उसने महंगू से पूछा, ''क्या मैं नदी का थोड़ा पानी पी सकता हूं?''

''जरूर पी सकते हो।'' महंगू ने हंसकर कहा।

पानी पीने के बाद कल्लू कौवे ने जोर की डकार ली फिर बोला, ''मैं तुम लोगों की बातें सुन रहा था। हम पेड़ों पर रहते हैं। इन पेड़ों पर फल-फूल होते हैं। जिनका उपयोग सभी लोग करते हैं। लेकिन हमारे वन के साथी फल-फूल खाने के साथ-साथ पेड़ों की पत्तियों और तनों को भी तोड़ डालते हैं।''

''अब वे ऐसा नहीं करेंगे। अगर वे ऐसा करेंगे तो मैं उन्हें रोकूंगी। लेकिन आप दोनों भी वन के जानवरों और पक्षियों को अपनी भूख-प्यास मिटाने के लिए नदी और पेड़ों का उपयोग करने दें।'' चिक्की हिरन ने उनसे विनती की।

''अगर वे नदी को साफ रखेंगे तो मैं उन्हें नदी का पानी पीने दूंगा!'' महंगू बोला।

''फिर तो मैं भी उन्हें पेड़ों के फल-फूल खाने दूंगा।'' कल्लू कौवा भी बोला।

चिक्की हिरन अपनी मां से मिलकर लौट आयी। आते ही उसने महंगू मगरमच्छ और कल्लू कौवे की बात पर ध्यान देना शुरू किया। साथ में अपने साथियों को भी ऐसा करने को कहा। उसके साथी उसकी बातों को समझ गए थे। अब वे भी वैसा ही करने लगे जैसा महंगू मगरमच्छ और कल्लू कौवा चाहते थे।

सुन्दर-वन में सब कुछ पहले जैसा हो गया। सब फिर से मिलजुल कर एक साथ रहने लगे। पहले की तरह अब वहां एक ही राजा था- राजा सिंहराज। ❑

-आमघाट कॉलोनी (पानी टंकी के पूर्व) आमघाट, सुभाष नगर, जिला-गाजीपुर (उ.प्र.)-233001

श्री प्रकाश जावड़ेकर ने प्रकाशन विभाग की अनेक ई-परियोजनाओं की शुरुआत की

केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर ने प्रकाशन विभाग, सूचना भवन नई दिल्ली में अनेक ई-परियोजनाओं की शुरुआत की। पुस्तक गैलरी अवलोकन के दौरान श्री जावड़ेकर ने विभाग की नए डिजाइन के साथ तैयार वेबसाइट, मोबाइल ऐप 'डिजिटल डीपीडी', रोजगार समाचार के ई-संस्करण और ई-पुस्तक 'सत्याग्रह गीता' की शुरुआत की।

इस अवसर पर श्री जावड़ेकर ने कहा कि 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा नागरिकों से पढ़ने की आदत डालने की बात के समान हमें पढ़ने की संस्कृति में नई जान फूंकनी चाहिए। उन्होंने पढ़ने की संस्कृति में सुधार लाने के लिए रीडिंग क्लब बनाने का आग्रह किया। श्री जावड़ेकर ने कहा कि रोजगार समाचार में निजी नौकरियों सहित सभी नौकरियों की सूची शामिल कर समाचार पत्र की भूमिका सुधारी जा सकती है। उन्होंने सुझाव दिया कि रोजगार समाचार जब कॉलेजों में वितरित किया जाएगा तो इससे छात्रों को अपना कौशल बढ़ाने और खुद को नौकरियों के बाजार के लिए बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रकाशन विभाग की नई सिरे से तैयार वेबसाइट आकर्षक और क्रियाशील लगती है। इसे रोजाना अपडेट करने से लोग जल्दी-जल्दी इस साइट को देखेंगे। प्रकाशन विभाग के लिए एक मोबाइल ऐप शुरु करने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि इससे ई-पुस्तक और किंडल के युग में लोगों की पढ़ने की आदतों को सुधारने में मदद मिलेगी।

ई-परियोजनाओं का विवरण इस प्रकार है :

नई क्रियाशील वेबसाइट : नई क्रियाशील वेबसाइट (www.publicationsdivision.nic.in) में प्रकाशन विभाग की पुस्तकों और अखबारों के बारे में नवीनतम जानकारी के साथ-साथ खरीदने

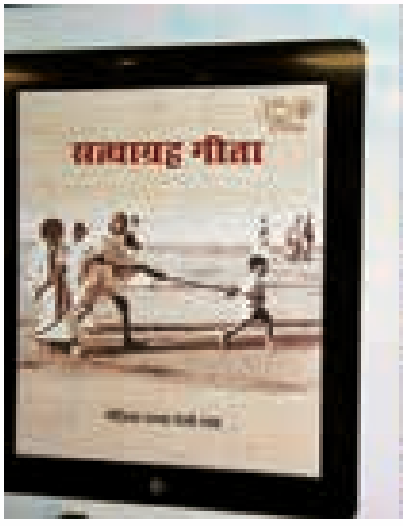

की सुविधा प्रदान की गई है। इस वेबसाइट से खरीदारी आसान हो जाएगी। वेबसाइट पर उपलब्ध सभी पुस्तकों की बिक्री के लिए भुगतान भारत कोष के जरिए होगा।

वेबसाइट देखने में आकर्षक है और इसकी सुनियोजित बनावट है। पुस्तकों की सूची और नई जानकारियां तथा नई जारी पुस्तकों को कलात्मक तरीके से प्रदर्शित किया गया है। इनमें अच्छे दिखने वाले रंगों का इस्तेमाल किया गया है और पृष्ठभूमि और मूलपाठ के बीच शानदार डिजाइन और चित्रों को रखा गया है। जानकारी विभिन्न वर्गों और श्रेणियों में है जो सभी हितधारकों जैसे पाठकों, लेखकों, अन्य प्रकाशकों, प्रिंटरों, एजेंटों आदि की जरूरतों को पूरा करती है। इसमें शामिल सामग्री को आसानी समझा जा सकता है।

वेबसाइट उपयोगकर्ता के अनुकूल है जिसे सोशल मीडिया पर आसानी से चलाया जा सकता है। इस वेबसाइट में किसी प्रकार की अव्यवस्था नहीं है और जानकारी हासिल करने की प्रभावी व्यवस्था है। सरल इंटरफेस हिंदी और अंग्रेजी में आसानी से देखने की सुविधा प्रदान करता है। इसे दृष्टिबाधित (स्क्रीन रीडर के साथ) सहित सभी लोग देख सकते हैं। फेसबुक और ट्वीटर पर मिलने वाले सुझावों के लिए सोशल मीडिया से इसे जोड़ा गया है।

इसमें गांधी@150 पर एक विशेष खंड है। इस खंड में महात्मा गांधी और अन्य गांधीवादी प्रकाशनों के सामूहिक कार्य के संस्करणों को पढ़ने के लिए विशेष गांधी कैटलॉग, गांधी हेरीटेज पोर्टल सहित खास विशेषताओं के साथ शामिल किया गया है।

मोबाइल ऐप 'डिजिटल डीपीडी' : यह गूगल प्ले स्टोर पर मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है और मोबाइल की बढ़ती वाणिज्यिक संभावनाओं को देखते हुए यह सुनने को सरल बनाएगा। मोबाइल ऐप को डिजिटल राइट्स प्रबंधन प्रणाली से जोड़ा गया है ताकि साहित्यिक चोरी पर अंकुश लगाया जा सके और आसानी से भुगतान के लिए भारत कोष भुगतान गेटवे से इसे जोड़ा जा सके।

रोजगार समाचार का ई-संस्करण : इम्प्लायमेंट न्यूज़ (अंग्रेजी) का हिंदी संस्करण रोजगार समाचार सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों सहित केंद्र सरकार में नौकरियों के अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए करियर संबंधी लेखों के जरिए विभिन्न क्षेत्रों में दाखिले और करियर के अवसरों के बारे में जानकारी और मार्गदर्शन देता है।

ई-रोजगार समाचार अखबार को डिजिटल रूप में प्रस्तुत करेगा और यह 400 रुपये के वार्षिक शुल्क पर उपलब्ध है। उम्मीद है कि ई-रोजगार समाचार युवा पाठकों की बढ़ती जरूरतों को पूरा करेगा और संचार के इलेक्ट्रॉनिक मोड की ओर बढ़ेगा।

ई-पुस्तक 'सत्याग्रह गीता': जानी-मानी कवयित्री पं. क्षमा देवी राव द्वारा 1930 में संस्कृत के छंदों में लिखी गई विरासत निधि पुस्तक में गांधी जी के जीवन और उससे जुड़ी घटनाएं प्रस्तुत की गई हैं। गांधी@150स्मारक के तहत डीपीडी ने पुस्तक का पीडीएफ संस्करण खरीदा है और पुस्तक का ई-संस्करण तैयार किया है। इसकी पहुंच अधिक लोगों तक सुनिश्चित करने के लिए अंग्रेजी अनुवाद भी शामिल किया गया है। अठारह अध्यायों में विभाजित (भगवत गीता के अध्यायों की तरह), सत्याग्रह, गीता, गांधी के विचारों, जीवन के दर्शन और संस्कृत के छंदों में उनके कार्य के तरीकों, गांधी के चरित्र और नीतियों को शामिल किया गया है। ❑

आओ बादल भैया आओ

–हरदेव सिंह धीमान्

आओ बादल भैया आओ, सूरज दादा को समझाओ,
इतनी गर्मी न बरसाओ, धरती मां को न तड़पाओ।
नदियां, झरने, ताल-तलैया, सूख रहे हैं सब ही ये भैया,
आकर इन सब को बचाओ, आओ बादल भैया आओ।
तोता, मैना, कबूतर, मोर, बिन पानी हो गए कमजोर,
सब को गर्मी से बचाओ, आओ बादल भैया आओ।
पेड़-पौधे या हो फुलवारी, पानी की सब में मारा-मारी,
सब को फिर जीवन दिलवाओ, आओ बादल भैया आओ।
सूखती फसलें दुखी किसान, पुकार रहे हैं भगवान्,
गर्मी से अब पीछा छुड़वाओ, आओ बादल भैया आओ।
अप्रैल, मई, और जून, जुलाई, अब तो मानसून भी आई,
सूरज का अब हठ तुड़वाओ, आओ बादल भैया आओ।
माने दादा अब आ गए भैया, फिर से भर गए ताल-तलैया।
मिल कर सब खुशी मनाओ, बादल भैया झूम के आओ।
मिल-जुल सब सावन गाओ, आओ बादल भैया आओ।

–पत्रालय दनावली, जिला शिमला, बरास्ता ननखरी,
(हि.प्र.)-172021

दुनिया हमारे आस-पास

दूसरे सौर मंडल में जीवन ले जा सकते हैं क्षुद्रग्रह

बैक्टीरिया युक्त क्षुद्रग्रह हमारी आकाशगंगा से निकलकर दूर किसी सौर मंडल में जीवन पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। वैज्ञानिकों ने ऐसा दावा किया है। शोध में क्षुद्रग्रहों द्वारा जीवन का प्रसार करने के बारे में अध्ययन किया है। इस प्रक्रिया को पैनसपर्मिया नाम दिया गया है। यह प्रक्रिया हमारी मिल्की वे आकाशगंगा में हो रही है। अमेरिका की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता इडन गिन्सबर्ग के अनुसार गणना के अनुसार हमारी आकाशगंगा में 10 खरब ऐसे क्षुद्रग्रह के आकार के पिंड हैं जिन पर बैक्टीरिया के रूप में जीवन होने की संभावना है। इस शोध में पता चला है कि आकाशगंगा में शनि के चांद इनसेलाडस जैसे 10 करोड़ पिंड और पृथ्वी के आकार के 1000 पिंड हैं जिनमें बैक्टीरिया के रूप में जीवन मौजूद है।

3400 साल पुराना महल

इराक के मोसुल बांध में जलस्तर घटने के चलते पुरातत्वविज्ञानियों को तकरीबन 3400 साल पुराना एक महल मिला है। इस खोज से प्राचीन मितानी सम्राज्य की व्यवस्था को समझने में काफी मदद मिल सकती है। जर्मनी की ट्यूबिंगन यूनिवर्सिटी ने दावा किया है कि जर्मन और कुर्दिश पुरात्वविज्ञानियों की एक टीम ने एक 3,400 साल पुराने महल को खोज निकाला है। महल का संबंध रहस्यमयी मितानी साम्राज्य से बताया जा रहा है। यह भी कहा गया है कि मोसुल बांध में जल स्तर नीचे गिरने के कारण यह खोज संभव हो सकी है। टिगरिस नदी पर बने मोसुल बांध को पहले सद्दाम बांध भी कहा जाता था। यह इराक का सबसे बड़ा बांध है। दुहक पुरातन निदेशालय के कुर्दिश पुरातत्वविज्ञानी हसन अहमद कासिम के अनुसार यह हाल के दशकों में हुई एक अहम पुरातात्विक खोज है जो कुर्दिश-जर्मन सहयोग की सफलता को दिखाती है। पिछले साल पुरातत्वविज्ञानियों ने एक आपातकालीन बचाव ऑपरेशन शुरू किया था।

अंतरिक्ष की रहस्यमयी तरंगें

वैज्ञानिकों के हाथ एक बड़ी कामयाबी लगी है। आकाशगंगा में रहस्यमयी मानी जाने वाली त्वरित रेडियो तरंगों के धमाकों (एफआरबी) के स्थान का पता लगा लिया गया है। इसकी उपस्थिति वाली आकाशगंगा हमारी ध रती से 3.6 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित है। फास्ट रेडिया ब्रस्ट (एफआरबी) एक प्रकार का रेडियो तरंग है। इसका पता लगाना जितना मुश्किल है उतना ही मुश्किल इसका अध्ययन करना भी है। यह एक सेकेंड के करीब अरबवें हिस्से की अवधि के लिए पैदा होती है। पहली एफआरबी को रेडियो टेलीस्कोप के जरिए वर्ष 2001 में पकड़ा गया था लेकिन 2007 में जाकर इसका विश्लेषण किया जा सका।

महानंदा नदी में पहली बार डॉल्फिन

राष्ट्रीय जलीय जीव डॉल्फिन पहली बार महानंदा नदी में मिली है। बिहार के अररिया वन प्रमंडल क्षेत्र में कराए गए सर्वे में कुल 14 डॉल्फिन देखी गई। यह सर्वे तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय (टीएमबीयू) के 'विक्रमशिला जैव विविधता शिक्षा एवं शोध केन्द्र' ने महानंदा और चार सहायक नदियों में किया। सर्वे टीम प्रमुख और पीजी बॉटनी विभाग के प्रो. सुनील चौध री के अनुसार सर्वे चार मार्च से 14 अप्रैल 2019 के बीच 25 दिनों तक 245 किलोमीटर क्षेत्र में हुआ। इस दौरान सात वयस्क और सात युवा डॉल्फिन देखे गए। उन्होंने कहा कि सर्वे अनुकूल मौसम में नहीं हुआ। जुलाई से फरवरी के बीच यह सर्वे होता तो परिणाम और बेहतर आते। भारत सरकार ने डॉल्फिन को 2009 में 'राष्ट्रीय जलीय जीव' घोषित किया है। डॉल्फिन नदी के स्वास्थ्य का सूचक और पारिस्थितिकी तंत्र के मजबूत होने का संकेत भी है।

(विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं से संकलित)

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

शीर्षक : अध्यापक हमारे मार्गदर्शक

विजेता – तमन्ना, क्वार्टर नं. 2383, डी.एम.डब्ल्यू कॉलोनी, पटियाला, पंजाब-147001 (इन्हें एक वर्ष तक बाल भारती मुफ्त भेजी जाएगी)

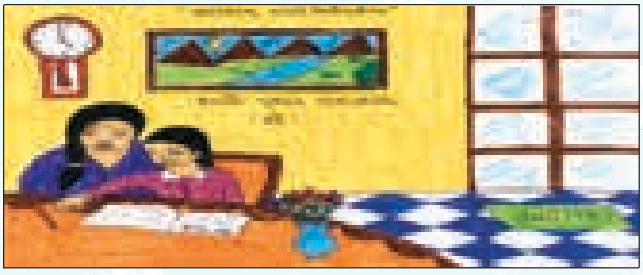

साक्षी द्विवेदी, रामाआश्रम के पीछे, सत्यप्रेमी नगर, नवाबगंज, बाराबंकी, उ.प्र.

प्रखर मिश्रा, अम्बारा, पश्चिम लालगंज, रायबरेली, उ.प्र.

सार्थक मिश्रा, अम्बारा, पश्चिम लालगंज, रायबरेली, उ.प्र.

टिंकी
और
बंटी
अरे बंटी! तुम तो एकदम पसीने से लथपथ हो!?
मगर तुम तो अपने अंकल की कार से गई थीं!?
क्यों? क्या कार...
...कार एयरकंडीशंड नहीं है!
अंकल का कहना है कि एयरकंडीशन चलाना पर्यावरण के लिए अच्छा नहीं है।
ओह! यह तो अच्छी बात है!
!
मगर बंटी, मैंने देखा था कि कार की खिड़कियों के शीशे चढ़े हुए थे!?
हाँ, वह इसलिए कि किसी को पता न चले कि कार एयरकंडीशंड नहीं है!
!?!?

वार्षिक मूल्य : ₹ 160
आर एन आई 699/57
डाक रजिस्टर्ड सं. डी एल (एस) – 05/3214/2018-20
बिना पूर्व भुगतान के साथ आर.एम.एस.
दिल्ली से पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू (डी एन)-51/2018-20
08 अगस्त, 2019 को प्रकाशित • 18-19 अगस्त 2019 को डाक द्वारा जारी

RNI 699/57
Postal Regd. No. DL (S) - 05/3214/2018-20
Licenced U (DN) - 51/2018-20
to post without pre-payment at RMS Delhi

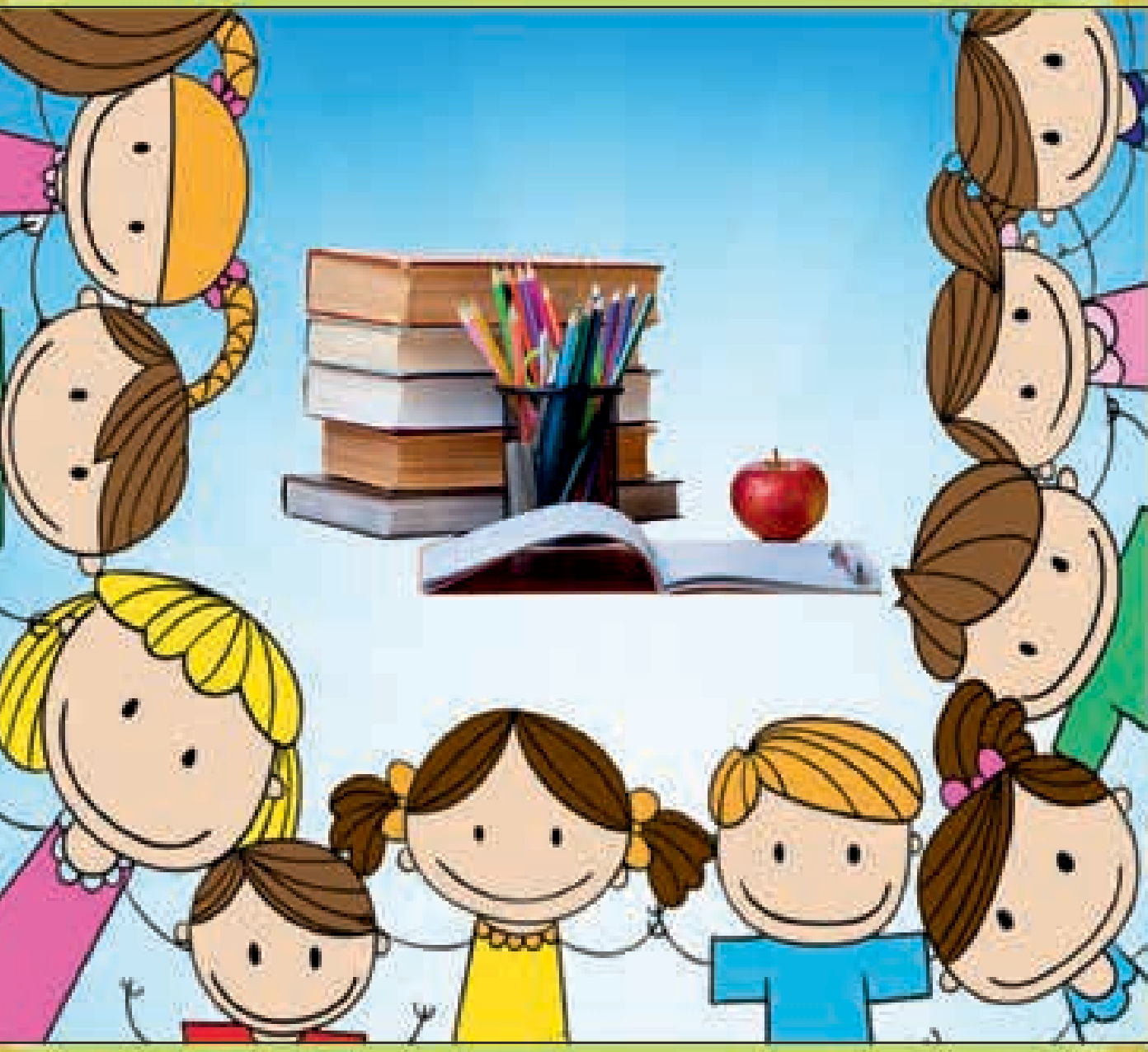

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. साधना राउत, प्रधान महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
मुद्रक : **इंडिया ऑफसेट प्रैस**, ए-1, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली। संपादक : आभा गौड़